सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 155, नई दिल्ली । गुरुवार, 15 अगस्त 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

तुम्हारी आवाज ही तुम्हारा हथियार है, अपने पौरुष को जगाओ और इस आजादी का जश्न मनाओ

03 पिता की संपति में बेटी का नहीं होगा अधिकार:हाईकोर्ट

06 इतिहास में गुमनाम जंगे आजादी के योद्धा

08 टाटा पावर की झींगा निर्यातक कंपनी पर लक्षित हमला

पैराग्लाइडिंग, भारी वाहन, सड़क मार्ग... दिल्ली में कई तरह के प्रतिबंध, 15 अगस्त को लेकर पढ़ें पुलिस की एडवाइजरी

दिल्ली में स्वतंत्रता दिवस समारोह पर सुरक्षा को लेकर दिल्ली पुलिस बहुत गंभीर रहती है। इसी को देखते हुए इस साल की तरह इस बार भी कई वस्तुओं पर बैन लगाया है। साथ ही ट्रैफिक डाइवर्जन भी किया है। एडवाइजरी में आसमान में उड़ने वाली वस्तुओं पर रोक लगाई है। साथ ही लाल किला के आसपास रोड पर यातायात प्रतिबंध लगाया गया है।

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने स्वतंत्रता दिवस से पहले यातायात एडवाइजरी जारी की है, जिसमें मुख्य समारोह में आमंत्रित लोगों की सुविधा और सुरक्षा कारणों से बृहस्पतिवार को लाल किला क्षेत्र के आसपास आवाजाही पर कुछ प्रतिबंध लगाए गए हैं।

एडवाइजरी में पैरा-ग्लाइडर, हाट एयर बैलून और छोटे आकार के पावर्ड एयरक्राफ्ट जैसे उप-पारंपरिक आसमान में उड़ने वाली चीजों पर एक अगस्त को लगाए गए प्रतिबंध को भी दोहराया है।

ये मार्ग रहेंगे बंद

एडवाइजरी में कहा गया है कि नेताजी सुभाष मार्ग, लोथियन रोड, मुखर्जी मार्ग, चांदनी चौक रोड, निषाद राज मार्ग, एस्प्लेनेड रोड और नेताजी सुभाष मार्ग से जुड़े लिंक रोड, राजघाट से आईएसबीटी तक रिंग रोड और आईएसबीटी से आईपी फ्लाईओवर तक आउटर रिंग रोड 14 अगस्त को आम यातायात के लिए बंद रहेंगे।

इन मार्गों पर जाने से बचें

स्वतंत्रता दिवस समारोह के लिए बिना पार्किंग लेबल वाले वाहनों को सी-हेक्सागन, इंडिया गेट, कोपरनिकस मार्ग, मंडी हाउस, सिकंदरा रोड, डब्ल्यू प्वाइंट, ए प्वाइंट तिलक मार्ग, मथुरा रोड, बीएसजेड मार्ग, नेताजी सुभाष मार्ग, जेएल नेहरू मार्ग, निजामुद्दीन खट्टा और आईएसबीटी कश्मीरी गेट के बीच रिंग रोड और निजामुद्दीन खट्टा से सलीमगढ़ बाईपास होते हुए आईएसबीटी कश्मीरी गेट तक आउटर रिंग रोड से बचने को कहा गया है।

लाल किले में आने वालों को दी सलाह

एडवाइजरी में आम जनता को सलाह दी गई है कि वे कैमरा, दूरबीन, रिमोट कंट्रोल वाली कार की चाबियां, छाता, हैंडबैग, ब्रीफकेस, ट्रांजिस्टर, सिगरेट लाइटर, टिफिन बॉक्स, पानी की बोतलें, लंच बॉक्स आदि न लाएं।

इसमें लोगों से किसी भी संदिग्ध वस्तु को न छूने और ऐसी किसी भी वस्तु की मौजूदगी की तुरंत नजदीकी पुलिसकर्मी को सूचना देने को कहा गया है।

आसमान में उड़ने वाले सभी तरह के यंत्र पर प्रतिबंध

पैरा-ग्लाइडर, पैरा-मोटर्स, हैंग ग्लाइडर, यूएवी, माइक्रो लाइट एयरक्राफ्ट, रिमोट से संचालित एयरक्राफ्ट, हाट एयर बैलून, छोटे आकार के पावर्ड एयरक्राफ्ट, क्वाडकाप्टर या एयरक्राफ्ट से पैरा जंपिंग आदि जैसे उप-पारंपरिक हवाई प्लेटफार्मों की उड़ान बृहस्पतिवार तक दिल्ली के अधिकार क्षेत्र में प्रतिबंधित रहेंगी।

मालवाहक वाहनों पर बैन

बुधवार रात 12 बजे से बृहस्पतिवार सुबह 11 बजे तक निजामुद्दीन खट्टा और वजीराबाद ब्रिज के बीच मालवाहक वाहनों को अनुमति नहीं दी जाएगी। साथ ही बुधवार रात 12 बजे से गुरुवार सुबह 11 बजे तक महाराणा प्रताप आईएसबीटी और सराय काले खां आईएसबीटी के बीच अंतरराज्यीय बसों को भी अनुमति नहीं दी जाएगी।

आईजीआई एयरपोर्ट टर्मिनल 1 से जल्द शुरू होंगी उड़ानें, स्पाइसजेट और इंडिगो की फ्लाइट के लिए तय हुई तारीख

आईजीआई एयरपोर्ट के टर्मिनल 1 को खोले जाने का निर्णय लिया गया है। बताया गया कि पहले की तरह इंडिगो और स्पाइसजेट की उड़ानें संचालित होंगी। वहीं एयरपोर्ट संचालन से जुड़ी एजेंसी डायल के अनुसार 17 अगस्त से स्पाइसजेट और दो सितंबर से इंडिगो की उड़ाने संचालित की जाएंगी। पढ़िए आखिर आईजीआई एयरपोर्ट को लेकर क्या-क्या अपडेट है?

नई दिल्ली। फोरकोर्ट की छत टूटकर गिरने की 28 जून को हुई घटना के बाद से बंद पड़े आईजीआई एयरपोर्ट के टर्मिनल 1 को चरणबद्ध तरीके से खोले जाने का निर्णय लिया गया।

एयरपोर्ट संचालन से जुड़ी एजेंसी डायल का कहना है कि यहां से पहले की तरह ही इंडिगो व स्पाइसजेट की उड़ानें संचालित होंगी। इनमें वे उड़ानें ही हैं, जो टर्मिनल 1 के बाद होने के बाद टर्मिनल 2 या 3 पर स्थानांतरित कर दी गई थी। इससे टर्मिनल 1 के शुरू होने पर अभी टर्मिनल 2 व 3 पर जो यात्रियों का अत्यधिक दबाव है, उसे काफी हद तक कम किया जा सकेगा।

17 अगस्त से स्पाइसजेट की उड़ानें

टर्मिनल 1 से सबसे पहले स्पाइसजेट की उड़ानों का संचालन होगा। इसे 17 अगस्त से शुरू किया जाएगा। शुरुआत में यहां से स्पाइसजेट की 13 उड़ानें यहां से संचालित होंगी। इन उड़ानों को टर्मिनल 3 से यहां स्थानांतरित किया जा रहा है।

2 सितंबर से इंडिगो की उड़ानें होंगी शुरू

स्पाइसजेट के बाद जिस दूसरी एयरलाइंस की उड़ानों का यहां से संचालन होगा, वह इंडिगो है। टर्मिनल बंद होने से पहले भी यहां से इंडिगो व स्पाइसजेट की उड़ानें संचालित होती थी। डायल के अनुसार 2 सितंबर से यहां इंडिगो की उड़ानों का संचालन शुरू होगा। शुरुआत में 34 उड़ानें यहां से संचालित होंगी। अभी इंडिगो की ऐसी उड़ानें जो टर्मिनल 1 से संचालित होती थी, उन्हें फोरकोर्ट की छत टूटकर गिरने से जुड़े प्रकरण के बाद स्थानांतरित कर टर्मिनल दो पर स्थानांतरित कर दिया गया था। अब ये उड़ानें वापस टर्मिनल 1 से संचालित होंगी।

पर्यावरण पाठशाला : "स्वतंत्रता दिवस पर पर्यावरण की सुरक्षा"

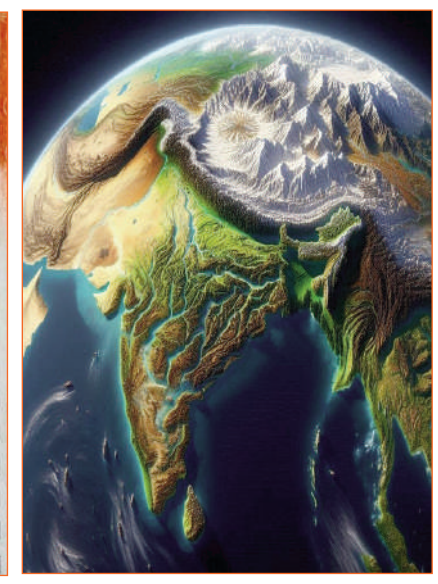

डॉ. अंकुर शरण

78वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर, आइए हम सभी अपनी धरती माता के लिए कुछ अच्छे कदम उठाएं और उसकी सेहत का ख्याल रखने के लिए एक चेकलिस्ट तैयार करें। सरल और छोटे-छोटे कार्य भी बड़े बदलाव ला सकते हैं। यहां 15 आदतें दी गई हैं, जिन्हें आप अपनाकर 'नेशनल ड्राइव' का हिस्सा बन सकते हैं और अपने जीवन को सतत और न्यूनतमवादी तरीके से जी सकते हैं:

कूड़ा-कचरा न फैलाएं - जहाँ भी जाएँ, अपने आस-पास सफाई बनाए रखें। प्लास्टिक का उपयोग कम करें और कूड़ा हमेशा कूड़ेदान में ही डालें।

पानी की बचत करें - नल खुला छोड़ने की बजाय, जितना जरूरत हो उतना ही पानी इस्तेमाल करें। पानी की हर बूंद कीमती है।

पेड़-पौधे लगाएं - अपने घर, स्कूल या पार्क में पेड़-पौधे लगाएं। वे न केवल ऑक्सीजन देते हैं बल्कि धरती को हरा-भरा बनाते हैं।

ऊर्जा की बचत करें - जब जरूरत न हो, तब बिजली के उपकरण बंद कर दें। कम ऊर्जा वाले बल्ब और उपकरणों का इस्तेमाल करें।

पुनः उपयोग करें - किसी भी चीज़ को फेंकने से पहले सोचें, क्या इसे दोबारा इस्तेमाल किया जा सकता है? पुराने कपड़े, खिलौने, और कागज का पुनः उपयोग करें।

स्थानीय उत्पादों का उपयोग करें - अपने स्थानीय बाजार से चीज़ें खरीदें। इससे न केवल स्थानीय कारीगरों को समर्थन मिलेगा बल्कि पर्यावरण पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें - जब संभव हो, निजी वाहन की बजाय बस, साइकिल, या पैदल चलें। इससे प्रदूषण कम होगा।

प्लास्टिक से बचें - प्लास्टिक की बोतल, बैग और अन्य वस्तुओं की बजाय पुनः उपयोग योग्य चीजों का इस्तेमाल करें।

जानवरों की देखभाल करें - अपने आस-पास के जानवरों का ध्यान रखें। उनके लिए पानी और खाना रखें।

जंगलों की रक्षा करें - पिकनिक या कैम्पिंग के दौरान पेड़ों को नुकसान न पहुंचाएं। जंगलों में आग न लगाएं।

इलेक्ट्रॉनिक कचरे का निपटान सही तरीके से करें - पुराने मोबाइल, लैपटॉप, और अन्य इलेक्ट्रॉनिक चीजों को सही तरीके से निपटान करें ताकि वे पर्यावरण को नुकसान न पहुंचाएं।

कागज की बर्बादी न करें - कागज का इस्तेमाल समझदारी से करें। जितना हो सके, डिजिटल माध्यम का उपयोग करें।

जल संरक्षण की आदत डालें - घर में और स्कूल में पानी का सही तरीके से उपयोग करना सीखें। छोटे-छोटे कदम, जैसे कि नल बंद करना, बड़े बदलाव ला सकते हैं।

पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाएं - अपने दोस्तों और परिवार के साथ पर्यावरण के बारे में चर्चा करें और उन्हें भी इन आदतों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपनी कहानी साझा करें - यदि आपने इन आदतों में से किसी को अपनाया है, तो अपनी कहानी दूसरों के साथ साझा करें। आप एक प्रेरणा बन सकते हैं।

इन सरल आदतों को अपनाकर आप हमारे देश की धरती माता की देखभाल में मदद कर सकते हैं। आइए, हम सभी मिलकर एक स्वस्थ और हरित भारत का निर्माण करें और अपनी स्वतंत्रता का सही अर्थ समझें।

indiangreenbuddy@gmail.com

कौन हैं कैलाश गहलोत? विवाद के बीच छत्रसाल स्टेडियम में फहराएंगे झंडा, पढ़िए उनके बारे में सबकुछ

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जेल में बंद हैं इसलिए उन्होंने छत्रसाल स्टेडियम में झंडा फहराने के लिए आतिशी के नाम पर इच्छा जताई थी। लेकिन जनरल एडमिनिस्ट्रेशन डिपार्टमेंट (जीएडी) ने उनके प्रस्ताव को खारिज कर दिया। वहीं इस मुद्दे को लेकर काफी राजनीति हुई। लेकिन बाद में एलजी वी. के. सक्सेना ने कैलाश गहलोत के नाम पर मुहर लगा दी। पढ़िए आखिर कैलाश गहलोत कौन हैं?

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस पर झंडा फहराने को लेकर शुरू हुई राजनीति इन दिनों चर्चा का विषय बनी हुई है। दरअसल, आम आदमी पार्टी ने झंडा फहराने के लिए शिक्षा मंत्री आतिशी के नाम पर मुहर लगाई थी, लेकिन उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने आतिशी के नाम को खारिज कर दिया।

छत्रसाल स्टेडियम में कैलाश गहलोत करेंगे ध्वजारोहण

इसके बाद एलजी ने आप सरकार में गृहमंत्री कैलाश गहलोत के नाम पर मुहर लगाई है। अब ऐसे में 15 अगस्त को छत्रसाल स्टेडियम में कैलाश गहलोत ही ध्वजारोहण करेंगे।

कौन हैं कैलाश गहलोत

कैलाश गहलोत का जन्म 22 जुलाई 1974 को दिल्ली में गहलोत गोत्र के एक जाट परिवार में हुआ था। कैलाश गहलोत के पिता का नाम राम चंद्र गहलोत हैं।

कैलाश गहलोत ने दिल्ली विश्वविद्यालय से ली डिग्री

गहलोत ने दिल्ली विश्वविद्यालय से बैचलर ऑफ आर्ट्स, बैचलर ऑफ लॉ, मास्टर ऑफ लॉ की डिग्री प्राप्त की थी। कैलाश गहलोत वर्तमान में अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली दिल्ली सरकार के कैबिनेट मंत्री हैं।

बता दें कि कैलाश गहलोत दिल्ली की छठी विधानसभा के सदस्य हैं। वह नई दिल्ली के नजफगढ़ निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं और आम आदमी पार्टी राजनीतिक दल के सदस्य हैं।

कैलाश गहलोत के हैं दो बेटी

मंत्री कैलाश गहलोत की पत्नी का नाम मौसमी मिश्रा गहलोत है। उनके दो बेटियां हैं। कैलाश गहलोत दिल्ली में ही अपने परिवार के साथ रहते हैं।

एलजी ने आतिशी के नाम को किया खारिज

दिल्ली सरकार के जनरल एडमिनिस्ट्रेशन डिपार्टमेंट (जीएडी) ने मंगलवार को मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के उस प्रस्ताव को खारिज कर दिया था, जिसमें उन्होंने स्वतंत्रता दिवस पर छत्रसाल स्टेडियम में होने वाले कार्यक्रम में अपने स्थान पर आतिशी द्वारा ध्वजारोहण किए जाने की इच्छा जताई थी।

गोपाल राय ने CM से मुलाकात के बाद दिए थे आदेश

उल्लेखनीय है कि इससे पहले दिल्ली सरकार में कैबिनेट मंत्री गोपाल राय ने सोमवार को तिहाड़ जेल में सीएम केजरीवाल से मुलाकात के बाद सामान्य प्रशासन विभाग (जीएडी) को लिखित आदेश जारी कर स्वतंत्रता दिवस पर आतिशी की ओर से ध्वजारोहण की व्यवस्था करने का आदेश दिया था।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

ये हैं देश के 5 सबसे महंगे हिल स्टेशन, जहां पर जाने से खाली हो सकता है आपका अकाउंट

पहाड़ों और चोटियों पर घूमने का अपना ही अलग मजा होता है। अगर आप भी इन जगहों पर जाने का प्लान बना रहे हैं, तो हम आपको उन पहाड़ी जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पर घूमकर आपका अकाउंट खाली हो सकता है।

पहाड़ों और चोटियों पर घूमने का अपना ही अलग मजा होता है। वैसे अगर आप भी घूमने के शौकीन हैं, तो अब तक कई हिल स्टेशनों को एक्सप्लोर कर चुके होंगे। लेकिन क्या आप जानते हैं कि भारत में कुछ ऐसी भी पहाड़ी जगहें हैं, जिनको अमीरों का माउंटेन प्लेस कहा जाता है। आज हम आपको इस आर्टिकल के जरिए देश के सबसे महंगे हिल स्टेशनों के बारे में बताने जा रहे हैं। बता दें कि इन जगहों पर घूमने के लिए अच्छा खासा कमाने वालों की भी जेब खाली हो जाती है। ऐसे में अगर आप भी इन जगहों पर जाने का प्लान बना रहे हैं, तो हम आपको उन पहाड़ी जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पर घूमकर आपका अकाउंट खाली हो सकता है।

पहाड़ों और चोटियों में घूमने का मजा ही कुछ और है, जब तक महीने का एक चक्कर ना लगा लें, तब तक सब कुछ फीका ही लगता है। वैसे अभी तक आप सस्ते हिल स्टेशनों में घूमे होंगे, लेकिन क्या आप जानते हैं भारत में कुछ ऐसी पहाड़ी जगह भी हैं जिन्हें अमीरों का माउंटेन प्लेस भी कहते हैं। जी हां, हम बात कर रहे हैं देश के सबसे महंगे हिल स्टेशनों की, जहां जाकर अच्छे खासे कमाने वालों की भी जेब खाली हो जाती है। अगर आप जाने का प्लान बना रहे हैं, तो पहले जान लें उन पहाड़ी जगहों के बारे जहां जाकर आपका अकाउंट खाली हो सकता है।

शिलांग

मेघालय की राजधानी शिलांग भारत के उत्तर-पूर्व में एक पहाड़ी शहर है। यह समुद्र तल से 1496 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। 1947 में मेघालय बनने से पहले शिलांग असम की राजधानी था। यहां का माहौल और मौसम आदि सब बहुत अच्छा है। यह दुनिया के सबसे ज्यादा बारिश वाले स्थान चेरापूंजी से सिर्फ 56 किमी की दूरी पर है। शिलांग में बेहद खूबसूरत झील और झरने हैं। यह जगह देवदार के जंगलों और पहाड़ों से घिरा हुआ है। यहां घूमने के लिए आपको 35-40 हजार रुपए खर्च करने पड़ेंगे।

पोंमुड़ी

पोंमुड़ी पहाड़ियों को सुनहरा चोटी या केरल का कश्मीर भी कहा जाता है। यह तिरुवनंतपुरम जिले में स्थित है। पोंमुड़ी चोटी पश्चिमी घाट पर्वत श्रृंखला का हिस्सा है, जोकि 1100 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यहां पर जंगल, चाय के बागान, घाटियां और पहाड़ियां आदि हैं। इस क्षेत्र में आपको 283 प्रजाति के पक्षी और 323 प्रजाति की तितलियां देखने को मिलेंगी। यहां पर घूमने का खर्चा करीब 25-30 हजार के बीच आता है।

कुफरी

शिमला के पास बसा कुफरी हिल स्टेशन हनीमून मनाने वालों की पहली पसंद है। जब भी हिमाचल को एक्सप्लोर करने की बात आती है, तो सबसे पहले कुफरी का नाम आता है। हिमालय की गोद में बसा कुफरी बेहद खूबसूरत है। यहां पर आपको हरी-भरी घाटियां देखने को मिलेंगी, जो सर्दियों के मौसम में बर्फ से ढक जाती हैं। देवदार और चीड़ के पेड़ इसकी खूबसूरती को बढ़ाने का काम करते हैं। आप इस जगह को 20-25 हजार में आराम से एक्सप्लोर कर लेंगे।

खज्जियार

हिमाचल प्रदेश में डलहौजी से बस 26 किलोमीटर दूरी पर बसा खज्जियार एक बेहतरीन हिल स्टेशन है। यह दुनिया की उन 160 जगहों में से एक है, जहां कि खूबसूरती की तुलना स्विटरलैंड से की जाती है। 6500 फीट की ऊंचाई पर बसा खज्जियार हिल स्टेशन अपनी प्राकृतिक सुंदरता और मस्त मौसम के लिए जाना जाता है। यहां पर आपको घने जंगल, हरे-भरे घास के मैदान और बर्फ से ढके हिमालय की चोटियों को देखकर आपका दिल खुश हो जाएगा। खज्जियार झील और चमेरा झील यहां की खूबसूरती में चार चांद लगाने का काम करते हैं। यहां पर घूमने के लिए 30-35 हजार रुपए का खर्च आता है।

दार्जलिंग

दार्जलिंग बेहद शानदार हिल स्टेशन है। यह हिल स्टेशन पश्चिम बंगाल में शिवालिक पहाड़ियों पर बसा है। बता दें कि करीब 2,045 मीटर की ऊंचाई पर होने के कारण दार्जलिंग में बड़ा ही अच्छा मौसम रहता है। आप जिधर नजरें घुमाओगे, उधर ही बर्फ से ढके पहाड़ देखने को मिलेंगे। यहां पर आप खिलौने जैसे ट्रेनें, हरे भरे चाय के बागान, दुनिया का तीसरा सबसे ऊंचा पहाड़ और कंचनजंगा आदि को मिलाकर दार्जलिंग को शानदार और खूबसूरत बनाने का काम करते हैं। अच्छी तरह से दार्जलिंग को एक्सप्लोर करने के लिए आपकी जेब में कम से कम 40 हजार रुपए होने चाहिए।

इन BB क्रीम से मिनटों में मिलेगा मेकअप वाला लुक, स्किन के लिए भी हैं बेस्ट

अगर आप रोजाना कॉलेज या ऑफिस जाती हैं, तो आप झटपट तैयार होती होंगी। ऐसे में रोजाना कोई मेकअप पर ज्यादा समय नहीं खर्च कर सकता है। ऐसे में अगर आप बिना समय दिए फुल मेकअप वाला लुक चाहती हैं, तो आप इन बीबी क्रीम का यूज कर सकती हैं।

नई दिल्ली। अगर आप रोजाना कॉलेज या ऑफिस जाती हैं, तो आप झटपट तैयार होती होंगी। ऐसे में रोजाना कोई मेकअप पर ज्यादा समय नहीं खर्च कर सकता है। ऐसे में अगर आप बिना समय दिए फुल मेकअप वाला लुक चाहती हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। हम आपको इस आर्टिकल के जरिए कुछ ऐसी बीबी क्रीम के बारे में बताने जा रहे हैं, यह आपकी स्किन में मौजूद कमियों को ढककर आपको नेचुरल लुक देने का काम करता है। बता दें कि बीबी क्रीम से आपकी त्वचा को विटामिन और न्यूट्रिशन मिलता है। वहीं यह हर मौसम में आपकी त्वचा को हाइड्रेट और मॉइश्चराइज करके यूवी प्रोटेक्शन देती है।

मार्स बीबी क्रीम

मार्स की यह बीबी क्रीम आपके फेस पर लाइटवेट फाउंडेशन का काम करती है। इसको हर तरह की स्किन टाइप की महिलाएं यूज करती हैं। यह क्रीम आपको 6 शेड्स में मिलती है। ऐसे में आप अपनी स्किन टोन के हिसाब से इस क्रीम का चुनाव कर सकती हैं। यह आपकी त्वचा को मैट फिनिश देने का काम करती है। आप इस क्रीम को फेस मेकअप के तौर पर इस्तेमाल कर सकती हैं।

फेयर एंड लवली बीबी फेस क्रीम

फेयर एंड लवली मैट फिनिश वाली बीबी क्रीम फेस को नेचुरल टच देने का काम करती है और यह पोर्स को ब्लॉक नहीं होने देती है। इस क्रीम से पिंपल और एक्ने का खतरा नहीं होता है। यह आपके फेस के डार्क स्पॉट्स और झाइयों को कवर करती है। फेयर एंड लवली बीबी फेस क्रीम का नॉन ऑयली फिनिश आपकी स्किन को फ्रेश रखता है। हालांकि इसको अप्लाई करने से फेस को अच्छे से साफ कर लें।

रेनी बीबी क्रीम

यह बीबी क्रीम 7 इन 1 फीचर्स से भरी हुई है। इस क्रीम में SPF 30+++ भी शामिल है, जो हमारी स्किन को यूवी रेज से बचाता है। इसमें मौजूद विटामिन सी और Hyaluronic Acid होता है, जो त्वचा को हाइड्रेट रखती है और नरिशमेंट के साथ स्किन को स्मूद बनाती है। इस क्रीम में बटरस्कॉच की खुशबू आपको खुशनुमा एहसास कराती है।

द डर्मा बीबी क्रीम

बता दें कि यह क्रीम न्यूड कलर में आती है और इसको कोई भी स्किन टाइप वाली महिला इस्तेमाल कर सकती है। इसको फेस पर लगाने से झाइयां कवर होती हैं और यह हर जगह समान स्किन टोन देती है। यह क्रीम त्वचा को हाइड्रेट रखने के साथ ही इसमें सन प्रोटेक्शन भी मिलता है। द डर्मा क्रीम पैराबेन फ्री है, जिससे त्वचा को किसी तरह की एलर्जी से नहीं जूझना पड़ता है।

मामाअर्थ बीबी क्रीम

Mamaearth की यह बीबी क्रीम ग्लो सीरम वाली होती है। इस स्किन फाउंडेशन कंसीलर को हल्दी और विटामिन से इनरिच किया गया है। जहां हल्दी त्वचा को हाइड्रेट रखती है, तो वहीं स्किन को नरिश करने का भी काम करती है। वहीं सन प्रोटेक्शन के कारण यह त्वचा को टैनिंग से बचाता है और इस क्रीम को हर स्किन टोन के हिसाब से तैयार किया गया है।

पुत्रदा एकादशी के दिन करें ये उपाय, घर में बढ़ेगा सुख-सौभाग्य

एकादशी का व्रत भगवान विष्णु जी को समर्पित है। पुत्रदा एकादशी का व्रत 16 अगस्त को रखा जाएगा। पुत्रदा एकादशी के दिन कुछ उपाय करने से सुख-समृद्धि में वृद्धि होगी। पुत्रदा एकादशी के दिन कुछ उपायों को करने से आर्थिक दिक्कतों को दूर करने के साथ जीवन में सुख-समृद्धि भी बढ़ती है।

साल में कुल 24 एकादशी पड़ती है और हर माह में दो एकादशी आती है। सावन की पुत्रदा एकादशी भगवान श्री हरि विष्णु जी को समर्पित है। पंचांग के अनुसार, हर साल श्रावण महीने के शुक्ल पक्ष को एकादशी को ही पुत्रदा एकादशी के मनाई जाती है। पुत्रदा एकादशी के दिन कुछ उपायों को करने से आर्थिक दिक्कतों को दूर करने के साथ जीवन में सुख-समृद्धि भी बढ़ती है।

पुत्रदा एकादशी के दिन करें ये उपाय

- इस दिन भगवान विष्णु को पंचामृत से अभिषेक करें। ऐसा करने से आपके कार्यक्षेत्र में आ रही मुश्किलें दूर होंगी और आपके अपने स्किल्स दिखाने के नए मौके भी मिलेंगे।

- अगर आपके दांपत्य जीवन में मनमुटाव चल रहा है। घर में खूब क्लेश हो रहा है तो आप पुत्रदा एकादशी के दिन मां तुलसी की पूजा करें। इस दिन लक्ष्मी माता और तुलसी माता श्रृंगार की सामग्री अर्पित करें।

- पुत्रदा एकादशी के दिन दान करना काफी शुभ माना जाता है। इसलिए अपने जीवन की सभी मुश्किलों को दूर करने के लिए पुत्रदा एकादशी के दिन किसी गरीब या जरुरतमंद को भोजन कराएं।

- इस दिन श्रीमद् भागवत कथा का पाठ करना पुण्यदायक माना जाता है।

- अगर आप आर्थिक दिक्कतों से परेशान हैं तो आप ब्रह्म मुहूर्त में विष्णु भगवान की पूरी श्रद्धा के साथ विधिवत उपासना करें और 1 पान के पत्ते में ऊँ विष्णवे नमः लिखकर भगवान के चरणों में अर्पित करें। अगले दिन इस पत्ते को पीले रंग के कपड़े में लपेटकर तिजोरी में रख दे।

धूम्रपान करने वाले को इन 8 टेस्ट को जरुर करवाना चाहिए

अगर आप धूम्रपान करते हैं तो हमेशा खतरनाक बीमारियों खतरा बना रहता है। फेफड़े की बीमारी, हृदय रोग और कई अन्य जानलेवा बीमारियां होती हैं। जांच और प्रारंभिक पहचान आपके जीवन को बचा सकती है और आज तम्बाकू छोड़ने से कल जीवन की गुणवत्ता बेहतर हो सकती है।

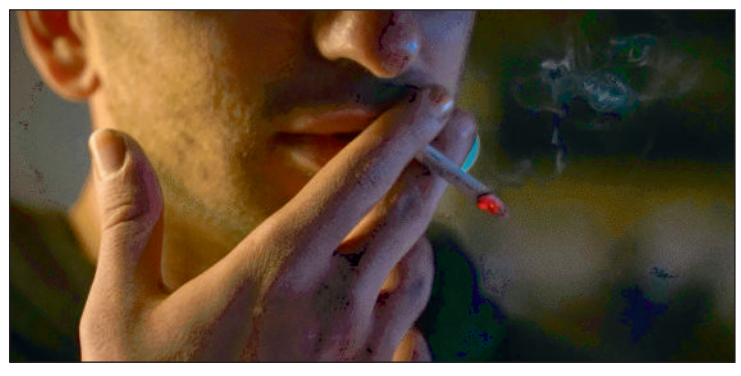

आजकल काफी बीमारियां फैल रही हैं। अगर आप धूम्रपान करते हैं तो हमेशा खतरनाक बीमारियों खतरा बना रहता है। जो लोग धूम्रपान करते हैं फेफड़े की बीमारी, हृदय रोग और कई अन्य जानलेवा बीमारियां का प्रमुख परिणाम हैं। अपने और अपने प्रियजनों के जीवन को बचाने के लिए आपका सबसे अच्छा और सुरक्षित दांव धूम्रपान छोड़ना होगा। जब आप धूम्रपान करते हैं तो आप खुद को और अपने आस-पास के लोगों को गंभीर बीमारियों के अधिक जोखिम में डालते हैं। जो लोग धूम्रपान करते हैं वो लोग एक बार ये 8 टेस्ट जरुर कराएं, यह टेस्ट हर एक धूम्रपान करने वाले को करवाने चाहिए।

छाती का एक्स-रे जरुर कराएं

धूम्रपान करने वालों के लिए छाती का एक्स-रे एक बहुत ही महत्वपूर्ण जांच है। एक्स-रे आपकी छाती की एक छवि प्रदान करता है और धूम्रपान के कारण होने वाली किसी भी समस्या का पता लगाने में मदद करता है।

स्पाइरोमेट्री

स्पाइरोमेट्री, जिसे पल्मोनरी फंक्शन टेस्ट (पीएफटी) के नाम से भी जाना जाता है, एक सरल श्वास परीक्षण है, जिसमें मरीज एक मशीन में फूंक मारता है और सांस लेता है, जिससे यह पता चलता है कि उसके फेफड़ों में कितनी हवा अंदर और बाहर जा रही है।

सीटी स्कैन

लो-डोज़ कंप्यूटेड टोमोग्राफी (LD-CT) स्कैन फेफड़ों के कैंसर जैसी बड़ी समस्याओं का पता लगाने में मदद करता है। यह बेहतर डायग्नोस्टिक इमेज प्रदान करता है जिससे डॉक्टरों को फेफड़ों के कैंसर जैसी समस्याओं का शुरुआती चरणों में पता लगाने में मदद मिलती है।

High-sensitivity C-Reactive Protein का टेस्ट

उच्च संवेदनशीलता सी-रिएक्टिव प्रोटीन (एचएस-सीआरपी) टेस्ट, यह एक रक्त परीक्षण है जो सी-रिएक्टिव प्रोटीन के निम्न स्तर का पता लगाता है और आपके शरीर में सूजन के सामान्य स्तर को मापता है। इसका उपयोग यह पता लगाने के लिए किया जा सकता है कि लोगों को हृदय रोग और स्ट्रोक का खतरा है या नहीं।

इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम

यह धूम्रपान करने वाले के दिल में किसी भी जटिलता का पता लगाने में मदद कर सकता है। यह नियमितता और दिल की धड़कन का परीक्षण करता है और किसी भी संभावित हृदय संबंधी समस्याओं का शुरुआती चरण में पता लगाने में मदद करता है।

डायबिटीज की जांच

धूम्रपान करने से शरीर इंसुलिन के प्रति अधिक प्रतिरोधी हो जाता है, जिससे ब्लड शुगर का स्तर बढ़ जाता है। यही कारण है कि मधुमेह की जांच के लिए भी जांच की सलाह दी जाती है।

विटामिन डी ब्लड टेस्ट

40 वर्ष से अधिक उम्र के हैं और धूम्रपान करते हैं? तो आपको यह परीक्षण अवश्य करवाना चाहिए। वास्तव में, अधिकांश धूम्रपान करने वालों के रक्त में विटामिन डी की मात्रा कम होती है।

किसी से भी नजरें मिलते ही दिल में लग जाती है आग, कहीं आप भी इन लोगों में शुमार तो नहीं?

ज्योतिषी लेटाओ वांग के अनुसार, कुछ रशियों के लोग रिश्तों में जल्दबाजी करते हैं क्योंकि वह मौज-मस्ती और नए रिश्ते के रोमांच में खुद को हमेशा डुबोए रखना चाहते हैं। ऐसे लोग अगर किसी व्यक्ति के साथ घुलमिल जाते हैं तो फिर वह जल्द से जल्द एक रिश्ता कायम करना चाहते हैं।

बहुत से ऐसे लोग होते हैं जो पहली मुलाकात के बाद एक हसीन रिश्ते के सपने सजाने लगते हैं और जब ऐसा हो जाता है तो कुछ समय बाद पछताने लगते हैं। किसी भी रिश्ते में आने में जल्दबाजी महंगी पड़ती है, लेकिन कुछ लोग ये बात जानते हुए भी गलतियां करते हैं। हैरानी की बात यह है कि ऐसे लोग बार-बार एक ही गलती दोहराते हैं और वह है रिश्ते में आने की जल्दबाजी करना। ऐसे लोग ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वह आदत से मजबूर होते हैं और उनकी ये आदतें उनके एक विशेष राशि के होने की वजह से होती है। हमारी आदतें और हमारा व्यक्तित्व काफी हद तक हमारी राशियों पर निर्भर करता है। कुछ राशियां हैं, जिसके जातक एक ही शाम में प्यार में पड़ जाते हैं और बच्चों तक के नाम सोच लेते हैं।

ज्योतिषी लेटाओ वांग के अनुसार, कुछ रशियों के लोग रिश्तों में जल्दबाजी करते हैं क्योंकि वह मौज-मस्ती और नए रिश्ते के रोमांच में खुद को हमेशा डुबोए रखना चाहते हैं। ऐसे लोग अगर किसी व्यक्ति के साथ घुलमिल जाते हैं तो फिर वह जल्द से जल्द एक रिश्ता कायम करना चाहते हैं और फिर अपने सोशल मीडिया पर उसकी घोषणा करने के लिए बेताब रहते हैं।

मेष राशि- वांग कहते हैं कि मंगल द्वारा शासित होने के कारण मेष राशि के जातक उत्साह से भरे होते हैं, इसलिए वह अक्सर नए रिश्तों में सिर के बल कूद पड़ते हैं। इस राशि के जातक मिलनसार होते है। इसकी वजह से इनके जीवन में कभी भी लोगों की कमी नहीं होती। इन्हीं लोगों के साथ बातचीत के दौरान राशि के जातक उनके प्यार में पड़ जाते हैं और फिर संदेश भेजकर अपने प्यार में होने की घोषणा भी कर देते हैं। यह लोग पहले काम करते हैं और फिर सोचते हैं, जिसकी वजह से इन्हें अक्सर बाद में पछताना पड़ता है।

तुला राशि- वांग कहते हैं कि तुला राशि वालों पर शुक्र ग्रह का शासन होता है, जो प्रेम और सुंदरता का ग्रह है, जो उनके रोमांटिक झुकाव को बहुत प्रभावित करता है। इसलिए इस राशि के जातकों को प्यार में पड़ने की तीव्र इच्छा होती है। ये लोग जल्द से जल्द साथी ढूंढ़ने की कोशिश करते है और इसके लिए ये एक ही शाम में एक से अधिक लोगों के साथ डेट पर भी जा सकते हैं। वांग कहते हैं कि जब सही व्यक्ति चुनने की बात आती है तो तुला राशि वाले सबसे अच्छे नहीं होते हैं। अपना समय लेने और मूल्यों और लक्ष्यों के बारे में सवाल पूछने के बजाय, वे डेट पर एक या दो गुण ढूंढ़ लेते हैं जो उन्हें पसंद होते हैं और मान लेते हैं कि यह होना ही था।

मीन राशि- वांग कहते हैं कि मीन राशि के लोग रोमांटिक होते हैं और प्यार के शुरुआती पलों में ही अति-रोमांटिक दिनों में बह जाते हैं। ये लोग जिस पल किसी से नजरे मिलाते हैं, उसी पल इनके दिल में आग लग जाती है और फिर क्या, ये लोग उस व्यक्ति के साथ अपने पूरे जीवन की कल्पना कर लेते हैं। वांग कहते हैं कि इस राशि के जातक रिश्ते कायम करने और लोगों के करीब रहने में माहिर होते हैं।

लाइव डेमो के दौरान फेल हुआ गूगल का Gemini AI, सवालों को जवाब देने में रहा नाकामयाब

एआई मॉडल जेमिनी को लेकर लाइव डेमो के दौरान परेशानियां आईं। गूगल जेमिनी से इस इवेंट के दौरान सवाल पूछे गए लेकिन मॉडल इन सवालों को जवाब देने में नाकामियाब रहा। ऐसा एक बार नहीं बल्कि दो बार हुआ। गूगल का ये इवेंट लाइव चल रहा था। इस दौरान एआई को कुछ टास्क दिए गए, जो मॉडल पूरा न कर सका।

गूगल का सबसे बड़ा मेड बाय गूगल इवेंट कंपनी के लिए जेमिनी के कारण से शर्मिंदगी का कारण बन गया। कंपनी के पावरफुल एआई मॉडल जेमिनी को लेकर लाइव डेमो के दौरान परेशानियां आईं। गूगल जेमिनी से इस इवेंट के दौरान सवाल पूछे गए लेकिन मॉडल इन सवालों को जवाब देने में नाकामियाब रहा। ऐसा एक बार नहीं बल्कि दो बार हुआ। गूगल का ये इवेंट लाइव चल रहा था। इस दौरान एआई को कुछ टास्क दिए गए, जो मॉडल पूरा न कर सका। मंगलवार को हुए गूगल इवेंट में कंपनी जेमिनी और इसकी नई खूबियों को लेकर जानकारी दे रही थी।

फेल हुआ गूगल का जेमिनी एआई

गूगल कैलेंडर ऐप में जेमिनी इंटीग्रेशन को डेमो के रूप में दिखा रहा था। जिसके तहत एआई से सवाल किया गया, जिसका जवाब न मिल सका। जवाब देने के बजाय जेमिनी पहले वाले प्रॉम्प्ट पर आ गया और यूजर को दोबारा से डिटेल्स एंटर करने को कहने लगा। ये इवेंट में दो बार हुआ।

हालांकि, गूगल जेमिनी को लेकर सोशल मीडिया यूजर्स ने ये सब नोटिस कर लिया, जिसके बाद माइक्रोब्लॉगिंग वेबसाइट एक्स पर यूजर्स अपनी-अपनी प्रतिक्रिया देने लगे।

हमें दिल्ली पुलिस का सुझाव तर्कपूर्ण लगा : सौरभ भारद्वाज

सुषमा रानी

नई दिल्ली। पार्टी मुख्यालय में हुई एक प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं कैबिनेट मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा, कि जैसा कि सभी को ज्ञात है, कि केंद्र सरकार के षडयंत्रों के कारण मनीष सिसोदिया 17 महीने तक जेल में रहे और उसके बाद सुप्रीम कोर्ट द्वारा उन्हें जमानत मिली I उन्होंने बताया कि मनीष सिसोदिया को जमानत मिलने के पश्चात पार्टी ने यह तय किया, कि मनीष सिसोदिया आज यानी की 14 अगस्त 2024 से पूरी दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में पदयात्रा करेंगे और दिल्ली के लोगों से मुलाकात करेंगे I उन्होंने बताया कि रणनीति के मुताबिक आज मनीष सिसोदिया जी की पहली पदयात्रा ग्रेटर कैलाश विधानसभा से शुरू होनी थी I उन्होंने बताया कि किन्हीं कारणों से आज यह पदयात्रा नहीं हो पा रही है I

पदयात्रा के निरस्त होने के कारण के संबंध में पत्रकारों को जानकारी देते हुए सौरभ भारद्वाज ने बताया, कि पदयात्रा के लिए पुलिस विभाग से अनुमति मांगे जाने पर पुलिस विभाग की तरफ से यह सुझाव आया, क्योंकि 15 अगस्त का माहौल है और देश में सुरक्षा और सतर्कता को देखते हुए यदि यह पदयात्रा कुछ दिन आगे बढ़ा दी जाए, अर्थात आज इसकी शुरुआत ना करके दो-चार दिन बाद इसकी शुरुआत की जाए तो सुरक्षा के नजरिए से यह बेहतर होगा I

उन्होंने कहा की पुलिस कि यह सलाह हमें भी तर्क पूर्ण नजर आई।

सौरभ भारद्वाज ने बताया कि पुलिस द्वारा दिए गए इस सुझाव को ध्यान में रखते हुए मनीष सिसोदिया ने अब यह तय किया है, कि पूरी दिल्ली में उनके द्वारा की जाने वाली पदयात्रा अब 14 अगस्त से शुरू न होकर 16 अगस्त यानी की स्वतंत्रता दिवस के अगले दिन से शुरू की जाएगी I उन्होंने बताया कि समय और स्थान वही रहेगा अर्थात 16 अगस्त को शाम 5:00 बजे डीडीए फ्लैट्स कल्काजी से मनीष सिसोदिया की पदयात्रा की शुरुआत की जाएगी I उन्होंने कहा कि हम ऐसा बिल्कुल नहीं चाहते की स्वतंत्रता दिवस के मौके पर किसी भी प्रकार की कोई समस्या कोई परेशानी खड़ी हो I इसीलिए पुलिस का सुझाव मानते हुए पार्टी ने यह तय किया है, कि अब मनीष सिसोदिया की पदयात्रा का शुभारंभ 16 अगस्त 2024 को ग्रेटर कैलाश विधानसभा से किया जाएगा ।

गुरु रविदास मार्ग के सौंदर्यीकरण के अन्तर्गत फुटपाथ और सर्विस रोड को मिलेगा मॉडर्न लुक-पीडब्ल्यूडी मंत्री आतिशी

सुषमा रानी

नई दिल्ली। केजरीवाल सरकार कालकाजी विधानसभा के गुरु रविदास मार्ग को नया स्वरूप देगी। इसके अंतर्गत गुरु रविदास मार्ग के सुदृढ़ीकरण और सौंदर्यीकरण का काम किया जा रहा है। बुधवार को पीडब्ल्यूडी मंत्री आतिशी ने इसके शुरुआती चरण में चल रहे कामों जा जायज़ा लिया।

बता दे कि, गुरु रविदास मार्ग के सौंदर्यीकरण के अन्तर्गत फुटपाथ और सर्विस रोड को मॉडर्न लुक दिया जाएगा।सेंट्रल वर्ज पर पौधों के ज़रिए सड़क की ख़ूबसूरती बढ़ाई जाएगी। साथ ही रिकॉरपेटिंग के ज़रिए रोड का सुदृढ़ीकरण भी करवाया जाएगा। लोगों की सुविधाओं के लिए यहाँ पार्किंग का निर्माण भी किया जाएगा।

इस मौक़े पर पीडब्ल्यूडी मंत्री आतिशी ने कहा कि, गुरु रविदास मार्ग कालकाजी विधानसभा के सबसे महत्वपूर्ण और व्यस्त सड़कों में से एक है और रोज़ाना लाखों लोग आवागमन के लिए इसका इस्तेमाल करते है। ऐसे में सड़क को नया स्वरूप मिलने से लाखों लोगों को फ़ायदा हिगा। गुरु रविदास मार्ग के सुदृढ़ीकरण-सौंदर्यीकरण के बाद कालकाजी विधानसभा की कई कॉलोनियों की मुख्य सड़क से इंटर-कनेक्टिविटी बेहतर हो जाएगी और ये ख़ूबसूरत सड़क हमारे विधानसभा की पहचान बनेगी।

पीडब्ल्यूडी मंत्री आतिशी ने कहा कि, मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी के नेतृत्त्व में दिल्ली की सड़कों को को बेहतर बनाने के लिए सरकार 'मिशन मोड' में काम कर रही है। कालकाजी से मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल जी को बहुत प्यार और सम्मान मिला है, इसी की बदौलत अब गुरु रविदास मार्ग वर्ल्ड क्लास बनने जा रहा है।

पीडब्ल्यूडी मंत्री आतिशी ने कहा कि, गुरु रविदास मार्ग कालकाजी विधानसभा की सबसे महत्वपूर्ण सड़कों में से एक है। तक़रीबन 4 किलोमीटर लंबी ये सड़क माँ आनंदमई मार्ग और महरौली-बदरपुर रोड को भी जोड़ने का काम करती है। और रोज़ाना बड़ी संख्या में लोग इसका इस्तेमाल करते है। ऐसे में इस सड़क का इस्तेमाल करने वाले लोगों को सड़क पर चलने का वर्ल्ड क्लास अनुभव मिल सके, उन्हें सुंदर, सुरक्षित सड़क मिल सके इस दिशा में गुरु रविदास मार्ग को नया स्वरूप देने का काम किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि, गुरु रविदास मार्ग के सौंदर्यीकरण के बाद कालकाजी का हर निवासी अपनी इस सड़क पर गर्व कर सकेगा। और ये सड़क कालकाजी की पहचान बनेगी।

पीडब्ल्यूडी मंत्री आतिशी ने कहा कि, चाहे जितनी बाधाएँ आ जाये लेकिन जबतक अरविंद केजरीवाल जी दिल्ली के मुख्यमंत्री है, वो दिल्लीवालों के काम नहीं रुकने देंगे।

कैसे मिलेगा गुरु रविदास मार्ग को नया स्वरूप

-सड़क की मज़बूती और ख़ूबसूरती बढ़ाने के लिए रिकॉरपेटिंग की जाएगी।

-वर्ल्ड क्लास स्टैंडर्ड की रोड मार्किंग की जाएगी।

-फुटपाथ की रीडिजाइनिंग और रिपेयरिंग कर उसे मॉडर्न और यूजर फ्रेंडली बनाया जाएगा।

तिलक और मेहंदी लगाकर स्कूल आएं बच्चे, तो नहीं दें सजा; एनसीपीसीआर ने दिए सख्त निर्देश

रक्षाबंधन के त्योहार के दौरान स्कूलों में स्कूलों में तिलक और मेहंदी पहुंचने वाले बच्चों के साथ भेदभाव नहीं किया जाएगा। उन्हें स्कूल में तिलक और मेहंदी लगाकर आने के लिए दंडित भी नहीं किया जाएगा। इस संबंध में राष्ट्रीय बाल अधिकार एवं संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य सचिव को निर्देश दिया है।

नई दिल्ली। राष्ट्रीय बाल अधिकार एवं संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य सचिव को निर्देश दिया कि रक्षाबंधन के त्योहार के दौरान स्कूलों में छात्रों के साथ भेदभाव न किया जाए। आयोग ने सभी स्कूलों से अनुरोध किया कि अगर छात्र राखी बांधकर या तिलक व मेहंदी लगाकर स्कूल आते हैं, तो उन्हें सजा न दें। आयोग के अध्यक्ष प्रियांक कानूनगों ने स्कूलों में भेदभाव की कुछ घटनाओं के बारे में चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि त्योहारों के उत्सव के कारण छात्रों को स्कूल के शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों द्वारा उत्पीड़न व भेदभाव का सामना करना पड़ता है।

सजा देना आरटीई अधिनियम का होगा उल्लंघन

स्कूल प्रबंधन छात्रों को रक्षाबंधन के त्योहार के दौरान राखी बांधकर या तिलक व मेहंदी लगाकर स्कूल आने की अनुमति नहीं देते हैं और ऐसा करने पर उनको शारीरिक दंड देने के साथ-साथ मानसिक तौर पर भी प्रताड़ित करते हैं। राष्ट्रीय बाल अधिकार एवं संरक्षण आयोग ने कहा कि अगर किसी स्कूल में इस तरह के सजा दी जाती है, तो यह शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम, 2009 का उल्लंघन होगा।

सेन्ट जोहन एम्बुलेंस ब्रिगेड दिल्ली ने स्वतंत्रता दिवस में फ़र्स्ट पोस्ट लगाई

परिवहन विशेष न्यूज

13 अगस्त, 2024 की सुबह स्वतंत्रता दिवस 24 फुल ड्रेस रिहर्सल के लिए प्राथमिक चिकित्सा सेटअप की समीक्षा करते हुये सेंट जॉन एम्बुलेंस ब्रिगेड, दिल्ली की आयुक्त, एवं परिवार कल्याण निदेशक और DGHS लिंक अधिकारी, डॉ. वंदना बग्गा द्वारा की गई थी।, साथ मे थे दिल्ली ब्रिगेड के अतिरिक्त आयुक्त डॉ. पी.के. राणा और वरिष्ठ अधिकारियों की एक टीम के साथ लाल किले और आसपास के क्षेत्र में।

पिता की संपत्ति में बेटी का नहीं होगा अधिकार:हाईकोर्ट

परिवहन विशेष न्यूज

एस.डी.सेठी। भारतीय संविधान के मुताबिक बेटा-बेटी को बराबर का अधिकार दिया गया है।इस वजह से माता-पिता की संपति में दोनो का समान अधिकार है। लेकिन अब इस मामले को लेकर दिल्ली हाईकोर्ट ने एक बडा फैंसला सुनाया है।फैंसले में यह बताया गया है कि किन कंडीशन में बेटी को उसके पिता की संपति में हक नहीं मिलेगा। दरअसल कोर्ट में हमेशा संपत्ति को लेकर कोई न कोई मामला आता रहता है।जिसमें कई बार बेटी के अधिकार को लेकर भी कुछ मामला सामने आया है।जिस पर कोर्ट ने बडा फैंसला सुनाया है, तथा कोर्ट ने बताया है कि किस स्थिति में पिता की संपति पर बेटी का कोई अधिकार नहीं होगा।

हाल ही में दिल्ली हाईकोर्ट ने कहा कि मृत पिता की संपति पर तलाकशुदा का कोई अधिकार नहीं है।क्योकि वो भरण पोषण की आश्रित हकदार नहीं है।कोर्ट ने इस कमेंट के साथ एक-एक तलाकशुदा महिला की अपील को खारिज कर दिया है। उस महिला ने अपने पारिवारिक अदालत में खुद कि भरण-पोषण के लिए मां तथा भाई पर दबाव बनाया था।लेकिन हाईकोर्ट ने उस अपील को पूरी तरह से खारिज कर दिया। महिला की अपील खारिज करते समय जस्टिस नीना बंसल कृष्णा और सुरेश कुमार कैत की पीठ ने कहा कि हिंदू दत्तक ग्रहण एवं भरण-पोषण अधिनियम की धारा-21 सिर्फ उन आश्रित के लिए है जो भरण पोषण का दावा कर सकते है। बता दें कि इस मामले को लेकर याचिकाकर्ता ने कहा था कि साल 1999 में उनके पिता की मृत्यु हो गई थी।उनके कुल 4 आश्रित थे।जिसमें मां,एक बेटा और 2 बेटियां शामिल है। उस दौरान उन्होने यह भी कहा कि उन्हें उत्तराधिकारी के रूप में कानूनी तौर पर कोई हिस्सा नहीं मिला।दलील के दौरान उसने कहा कि उसकी मां तथा भाई ने विश्वास दिलाया कि उन्हे 45000 रूपये हर महीने गुजारा भत्ते के दिए जाएगे,लेकिन उन्हें उनकी संपति में हिस्सा के लिए दबाव नहीं देना होगा। महिला ने अपनी सफाई में कहा कि उनके भाई और मां ने उन्हें नवंबर-2014 तक तो भरण पोषण के लिए पैसे दिए गए, लेकिन उसके बाद बंद कर दिया गया। बता दें कि उस महिला को सितंबर 2001में अपने पति से तलाक हो गया था। उस दौरान अदालत ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि उस महिला को उनके पति की तरफ से गुजारा भत्ता मिला या नहीं? जब दलील खत्म हुई, तब उसके बाद कोर्ट ने कहा कि परिस्थिति कितनी खराब क्यों ना हो जाए HAMA के अन्तर्गत दो अधिनियम में परिभाषित आश्रित नहीं है।इस वजह से उन्हें अपनी मां तथा, भाई से भरण पोषण के लिए दावा करने का कोई अधिकार नहीं है।

छात्रों की मौत का कारण बनने का कोई इरादा नहीं था, जमानत याचिका पर आरोपियों की दलील

राव कोचिंग सेंटर में तीन यूपीएससी के तीन छात्रों की मौत मामले में आरोपियों की जमानत याचिका पर कोर्ट में सुनवाई। जमानत याचिका पर दलील दी कि उनका छात्रों की मौत का कारण बनने का कोई इरादा नहीं था। कोर्ट में मामले की अगली सुनवाई 17 अगस्त को होगी। वहीं छात्र ने शिकायत की थी बेसमेंट में कोई सुरक्षा उपाय नहीं है।

नई दिल्ली। ओल्ड राजेंद्र नगर स्थित कोचिंग सेंटर राव आईएएस स्टडी सर्किल के बेसमेंट के चार सह-मालिकों ने अपनी जमानत याचिका पर दलील दी कि उनका छात्रों की मौत का कारण बनने का कोई इरादा नहीं था। मामले की सुनवाई के दौरान राउज एवेन्यू कोर्ट की प्रधान जिला और सत्र न्यायाधीश अंजू बजाज चांदना ने सवाल किया कि नगर निगम ने कोचिंग सेंटर को कारण बताओ नोटिस दिए जाने के बाद कोई कार्रवाई क्यों नहीं की?

कोचिंग सेंटर के बेसमेंट में सुरक्षा उपायों को लेकर एक छात्र ने दिल्ली सरकार के पोर्टल पर राव आईएएस स्टडी सर्किल के मालिक के खिलाफ शिकायत की थी। छात्र ने शिकायत की थी बेसमेंट में कोई सुरक्षा उपाय नहीं है, जिससे भविष्य में बड़ा हादसा हो सकता है।

कारण बताओ नोटिस पर कोई कार्रवाई नहीं

हालांकि, कारण बताओ नोटिस पर कोचिंग सेंटर की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई और न ही निगम की ओर से कोई कार्रवाई की गई। अदालत ने सह-मालिकों से सवाल किया कि आपकी जमीन पर बेसमेंट में पुस्तकालय चल रहा था। क्या किरायेदार ने आपको इस बारे में सूचित नहीं किया। यह चिंता का विषय है।

48 घंटे में भी नहीं किया बंद

अदालत ने कहा कि कारण बताओ नोटिस में कहा गया कि इसे 48 घंटों के भीतर बंद किया जाना चाहिए, फिर भी अधिकारी चुप क्यों बैठे थे? आरोपितों की ओर से पेश अधिवक्ता अमित चड्ढा अदालत को बताया कि निगम अधिकारी एक साल तक इंतजार करने के बजाय बेसमेंट को सील कर सकते थे।

17 अगस्त को होगी सुनवाई

कोर्ट में मामले की अगली सुनवाई 17 अगस्त को होगी। अधिवक्ता अमित चड्ढा ने दलील दी कि बीएनएस की धारा 105 (गैर इरादतन हत्या) लगाने के लिए जानकारी के साथ-साथ मौत का इरादा भी होना चाहिए। उपहार सिनेमा अग्निकांड के फैसले का जिक्र, जिसमें आरोपितों को सुप्रीम कोर्ट ने धारा 304ए (लापरवाही से मौत का कारण) के तहत दोषी ठहराया था, करते हुए अधिवक्ता ने दलील दी कि सिनेमा हाल के मालिकों को जानकारी थी (लेकिन इरादा नहीं था)।

अधिवक्ता ने दलील दी कि अदालत को यह देखना होगा कि क्या ज्ञान था क्योंकि ज्ञान हर जगह है। यहां तक कि मामले की स्थिति रिपोर्ट भी कहती है कि कोई इरादा नहीं था। सह-मालिक तेजिंदर सिंह, परविंदर सिंह, हरविंदर सिंह और सरबजीत सिंह को 28 जुलाई को गिरफ्तार किया गया था।

मृतक छात्र नेविन दल्विन की ओर से पेश अधिवक्ता अभिजीत आनंद ने आरोपितों के अधिवक्ता की दलीलों का विरोध किया। आनंद ने दलील दी कि सह-मालिकों को जानकारी और इरादा दोनों था, उन्हें जलभराव के बारे में पता था और यह उनकी जानकारी में था कि बारिश के 10 मिनट के अंदर सड़क पर पानी भर जाता है।

लंदन, पेरिस, सिंगापुर जैसा बनाने की जगह केजरीवाल दिल्ली को बदहाल , नशे , भ्रष्टाचारियों की राजधानी बना दिया: देवेन्द्र यादव

सुषमा रानी

नई दिल्ली, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने स्वतंत्रता दिवस पर दिल्लीवासियों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं दी। कल प्रदेश कार्यालय में स्वतंत्रता दिवस पर तिरंगा फहराया जाऐगा और सभी जिला व ब्लॉक कांग्रेस कमेटियां अपने-अपने क्षेत्रों में बूथ स्तर पर ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित करेंगे, जिसमें दिल्ली के नागरिकों को भी आमंत्रित किया गया है।

देवेन्द्र यादव ने कहा कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव अभिषेक दत द्वारा रखी कांग्रेस की मांग पर उपराज्यपाल द्वारा एमएलए लेड फंड की जांच के आदेश पर धन्यवाद करते हुए कहा कि पिछले 10 वर्षों से जल भराव की समस्या का दिल्ली लगातार सामना कर रही है, क्योंकि जरा सी बारिश में दिल्ली बह जाती है, जिससे हर वर्ष लोगों की जान जा रही हैं। हर वर्ष 7-10 करोड़ रुपया विधायकों को गाद निकालने, नालियों के निर्माण, सीवर की समस्या दूर करने और साफ पानी देने जैसी सुविधाओं के लिए दिया जाता है। यादव ने कहा कि उपराज्यपाल द्वारा हमारी मांग को मानने के बाद एमएलए लेड फंड की जांच होने पर एक बहुत बड़े घोटाला उजागर होगा। उन्होंने कहा कि 10 वर्षो 70-100 करोड़ रुपया अगर दिल्ली के कामों लगाया जाता तो हालात इतने बदहाल नही होते।

प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने कहा कि आप पार्टी और भाजपा ने स्वतंत्रता दिवस की मान्यताओं को बदलकर राजनीतिक प्रचार का माध्यम बना दिया है। उन्होंने कहा कि मानसून की भारी बारिश के बाद जलभराव, नालों, पार्कों में डूबने व पानी में करंट उतरने के कारण 20 लोगों की मौत पर भाजपा और आप दोनों पार्टियां उन्हें न्याय दिलाने की जगह सिर्फ आरोप प्रत्यारोप कर रहे हैं। आप पार्टी पार्टी के जानलेवा मॉडल को जलभराव में 10 बच्चां की मौत ने उजागर कर दिया है और आप पार्टी अफसोस करने की जगह भ्रष्टाचार के आरोपी की बेल पर जश्न मना रही है जबकि सुप्रीम कोर्ट ने केजरीवाल की अंतरिम जमानत अपील खारिज कर दिया।

उन्होंने कहा कि पिछले 10 वर्षों में आप पार्टी की दिल्ली सरकार ने दिल्ली के लिए जरुरी प्राथमिकताओं और परिस्थितियों में सुधार और बदलाव करने के लिए सिर्फ जनता को गुमराह करने का काम किया है। झील बन चुकी टूटी सड़कों ने केजरीवाल के दिल्ली को झीलों का शहर बनाने सपने को साकार कर दिखाया है और दिल्ली को लंदन, पेरिस जैसी राजधानी बनाने की जगह उन्होंने दिल्ली को बदहाल राजधानी, नशे की राजधानी, भ्रष्टाचारियों की राजधानी बनाने में कामयाबी हासिल की है। उन्होंने कहा कि पार्टी में बिना पद मनीष सिसोदिया की आगामी विधानसभा चुनाव के अभियान में सक्रियता आम आदमी पार्टी के शीर्ष नेतृत्व पर सवाल खड़े करती है, कहीं यह केजरीवाल का सिसोदिया को सरकार और पार्टी में नजरअंदाज करने की पहल तो नही?

उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव में केजरीवाल की जेल वाली फोटो को इवेंट बनाकर वोट मांगना, केजरीवाल की बेल पर जश्न, सिसोदिया की बेल पर जश्न, स्वतंत्रता दिवस पर सत्यमेव जयते की डीपी लगाना आदि करके जहां आम आदमी पार्टी दिल्ली की जनता से सहानुभूति लेने की कोशिश कर रही है वहीं भाजपा की तिरंगा यात्रा को सफल बनाने में स्वच्छता अभियान की तरह पूरे सरकारी तंत्र को झोंक दिया है, जिसमें उपराष्ट्रपति सहित, केंद्रीय मंत्री, दिल्ली के उपराज्यपाल तक जुट गए है। यादव ने भाजपा और आप पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं से अपील की कि वे स्वतंत्रता दिवस पर तिरंगे की संवैधानिक मर्यादा को बनाऐ रखें।

उन्होंने कहा कि यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि स्वतंत्रता दिवस की गरिमा को बरकरार रखने की बजाय भाजपा और आम आदमी पार्टी द्वारा दिल्ली के छत्रसाल स्टेडियम में झंडा फहराने पर भी भरपूर राजनीति हुई। उन्हांने कहा कि केजरीवाल ने जेल से आतिशी को झंडा फहराने के लिए नामित करना और मनीष सिसोदिया के बेल पर बाहर आने के बाद उपराज्यपाल द्वारा कैलाश गहलोत को तिरंगा फहराने की जिम्मेदारी देना, कहीं न कहीं केजरीवाल की गैर मौजूदगी में आम आदमी पार्टी में पड़ती फूट को उजागर करता है।

कॉल सेंटर में बड़ा खेल, एक हजार लोगों को बेच चुके फर्जी सर्टिफिकेट; सरगना और महिलाएं समेत हत्थे चढ़े 21 शातिर

परिवहन विशेष न्यूज

नोएडा पुलिस के हाथ एक बड़ी कामयाबी लगी है। पुलिस ने फर्जी कॉल सेंटर का खुलासा करते हुए 21 आरोपितों को अरेस्ट किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपितों में सरगना और पांच महिलाएं भी शामिल हैं। पुलिस की जांच में पता चला कि ये शातिर करीब एक हजार लोगों से एक करोड़ रुपये की ठगी कर चुके थे। पढ़िए आखिर कैसे लोगों को झांसे में लेते थे।

नोएडा। सेक्टर-63 कोतवाली पुलिस ने नामी ई-कामर्स कंपनियों के माध्यम से सामान बेचने का झांसा देकर फर्जी सर्टिफिकेट बेचने वाले कॉल सेंटर का पर्दाफाश करते हुए गिरोह के सरगना समेत 21 आरोपितों को गिरफ्तार किया है। इनमें 16 पुरुष एवं पांच महिलाएं हैं।

एक करोड़ से ज्यादा की कर चुके थे ठगी

पुलिस के अनुसार, आरोपितों के पास से 12 डेस्कटॉप, 12 लैपटॉप, 12 कीबोर्ड, 12 माउस, छह सीपीयू, टैब, 28 मोबाइल बरामद हुए हैं। आरोपित पिछले ढाई वर्ष से किराये की बिल्डिंग में ठगी कर रहे थे। अबतक एक हजार लोगों से एक करोड़ रुपये से अधिक की ठगी कर चुके हैं।

डीसीपी सेंट्रल नोएडा शक्ति मोहन अवस्थी का कहना है कि साइबर हेल्प डेस्क पर पिछले कुछ समय से सूचना प्राप्त हो रही थी कि सेक्टर-63 डी-247/01 स्थित इन्फोबीम साल्यूशंस नाम की एक कंपनी नामी ई-कामर्स कंपनियां जैसे नायका, ईबे, मिंत्रा, ईटसे आदि के नाम से जाली सर्टिफिकेट बनाकर विक्रेताओं के साथ धोखाधड़ी कर रही है।

इन्होंने की थी शिकायत

ठगी का शिकार हुए श्रुति चौधरी, रश्मि गर्ग, अनुज तिवारी, यशा तैमूरी ने इस मामले की शिकायत सेक्टर-63 कोतवाली में दी थी। सूचना पर सर्टिफिकेट की प्रमाणिकता के संबंध में संबंधित ई-कामर्स कंपनियों को ई-मेल भेजकर जानकारी मांगी गई तो नामी कंपनियों ने कोई भी सर्टिफिकेट जारी करने से इनकार किया। ठगी करने वाली कंपनी को अपना अधिकृत पार्टनर नहीं बताया। ठग कंपनी विक्रेताओं से पैसे लेकर नामी कंपनी का भी नाम खराब कर रही थी।

फर्जी सर्टिफिकेट फ्रेम दीवारों पर लगे मिले

वहीं, पुलिस जब ठग कंपनी के पते पर पहुंची तो वहां नामी ई-कामर्स कंपनियों के फर्जी सर्टिफिकेट फ्रेम दीवारों पर लगे मिले। जिससे ठग कंपनी में आने वाले व्यक्ति को यकीन हो सके कि ठग नामी ई-कामर्स कंपनियों द्वारा उनके प्लेटफॉर्म पर सामान की बिक्री के लिए अधिकृत है। फिर विक्रेता से कहते कि अगर उन्हें नामी ई-कामर्स प्लेटफॉर्म पर अपना सामान बेचना है तो फीस देनी होगी। जिसके बाद वह विक्रेता का सामान ई-कामर्स वेबसाइट पर बिक्री के लिए प्रसारित करा देंगे।

बताया गया कि झांसे में आए विक्रेता आरोपितों को 15 से 20 हजार रुपये देते थे। बावजूद आरोपित न तो उनका सामान नामी ई-कामर्स साइट पर प्रसारित करते थे और न पैसे वापस करते थे। जांच पर पता चला चला है कि नामी कंपनी पर कोई भी सामान बेचने के लिए कोई फीस नहीं ली जाती थी। लेकिन विक्रेताओं को जाली सर्टिफिकेट की प्रति व्हाट्सएप व अन्य इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म पर भेजकर झांसे में लेते थे।

एनसीआर के बाहर रहने वाले लोगों को बनाते थे निशाना

एडिशनल डीसीपी ह्रदेश कठेरिया का कहना है कोई अपना पैसा वापस मांगने के लिए इन पर दबाव न डाले इसलिए आरोपित अधिकांश रूप से एनसीआर के बाहर और गैर राज्य के लोगों को अपना शिकार बनाते थे। जिससे वह यहां आकर कोई शिकायत ना कर सके। सभी फर्जी सर्टिफिकेट एवं अन्य डाटा ठग कंपनी के निदेशक जोगेंद्र, गुंजन कात्याल व आकाश शर्मा द्वारा तैयार कर अपने कर्मचारियों को भेजा जाता था।

इसके बाद कॉल सेंटर के कर्मचारी विक्रेता को फोन करके फर्जी सर्टिफिकेट व्हाट्सएप पर भेजकर प्रलोभन देकर ठगी करते थे। ठगी का पैसा आपस में बांटते थे। बाकी कर्मचारियों को 10 से 15 हजार रुपये के प्रतिमाह के वेतन पर रखा था। जिनका काम विक्रेता को फोन करने के साथ-साथ इंटरनेट मीडिया फेसबुक, व्हाट्सएप, एक्स, इंस्टाग्राम के माध्यम से झांसे में लेना था।

यूपी, दिल्ली, बिहार, राजस्थान, हिमाचल के रहने वाले हैं ठग

आरोपितों की पहचान मुजफ्फरनगर जोगेंद्र कुमार, औरैया के गोपाल सक्सेना, मथुरा के रेयांश शर्मा, सहारनपुर के अखिल गर्ग, गाजियाबाद के आकाश शर्मा, निशांत, आकाश यादव, मुकुल त्यागी, पूर्ति, बुलंदशहर के रवि कुमार, लोकेश चौधरी, संभल के प्रदीप कुमार, अमरोहा की गुंजन चौहान, बिसरख के कार्तिक मिश्रा, कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश) के अनिल कुमार, कैमूर बिहार के पंकज उपाध्याय, झुंझुनू (राजस्थान) के हिमांशु शर्मा, दिल्ली के सरस भारद्वाज, गुंजन कात्याल, स्वीटी व लखनऊ की मोनिका वर्मा के रूप में हुई है।

बिजली विभाग की खुली पोल, दो महीने में फुंक गए 23 ट्रांसफार्मर

गाजियाबाद में कई जगहों पर 10 और 14 साल पुराने जर्जर ट्रांसफार्मर भी जल गए। यह स्थिति तब है जबकि नगरीय विद्युत वितरण खंड एक चालू वित्त वर्ष में डेढ़ सौ करोड़ की लागत के 310 के सापेक्ष 264 कार्य पूरे हो चुके हैं। 46 कार्य अधूरे हैं। इस क्षेत्र में सबसे अधिक उपभोक्ता हैं और कई सरकारी संस्थान भी हैं।

गाजियाबाद। नो पावर कट जोन में रोज बिजली कटौती हो रही है। यह स्थिति तब है जबकि हर साल मरम्मत एवं रखरखाव के कार्य होते हैं।

रिपोर्ट में पता चला है कि जून और जुलाई माह में शहरी क्षेत्रों में लगाए गए 23 ट्रांसफार्मर फुंकने से घंटों नहीं दो-दो दिन लोगों को बिजली आपूर्ति बाधित होने से परेशानी झेलनी पड़ी। फरवरी में होने वाले मरम्मत एवं रखरखाव के कार्य करने के तहत जर्जर तार बदलने का काम अब कराया जा रहा है

तकनीकी फाल्ट से कई जगह हुई बिजली कटौती

सोमवार रात से लेकर मंगलवार सुबह तक तकनीकी फाल्ट और ट्रिपिंग के चलते कई कॉलोनियों में एक से चार घंटे तक बिजली आपूर्ति बाधित रही।

15 से अधिक क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति बाधित होने से पानी की आपूर्ति भी गड़बड़ा गई। इनमें अवंतिका, उदलनगर, सेवानगर, नवयुग मार्केट, कैलाभट्टा, दिल्ली गेट, अकबरपुर बहरामपुर, महरौली, विजयनगर , नंदग्राम, संजयनगर, गोविंदपुरम, बालाजी विहार, सेवानगर, लोहियानगर, पीले क्वार्टर, आर्यनगर, लालकुआं, प्रतापविहार, शिवपुरी, भूड भारत नगर, मोरटा, सिहानी, घूकना ,राजनगर एक्सटेंशन और हरबंशनगर, बागू और शिब्बनपुरा शामिल है।

प्रतापविहार में आज दो घंटे रहेगी बिजली आपूर्ति बाधित

एसडीओ रमेश चंद के अनुसार प्रतापविहार उपकेंद्र द्वितीय की रूटिन टेस्टिंग के चलते बुधवार शाम चार बजे से छह बजे तक शटडाउन लिया जाएगा। इस दौरान केंद्र से जुडे प्रताविहार जे ब्लाक, के ब्लाक, केए ब्लाक,सजवान नगर, माता कालोनी और संतोष मेडिकल कॉलेज की बिजली आपूर्ति बाधित रहेगी।

बिजली-पानी की समस्या से परेशान ग्रामीण सड़क पर बैठे, लगा लंबा जाम

परिवहन विशेष न्यूज

बिजली-पानी के संकट को लेकर आक्रोशित गाडौली गांव के ग्रामीणों ने मुख्य सड़क को जाम कर दिया। इससे सड़क के दोनों तरफ लंबा जाम लग गया। ग्रामीण बिजली विभाग और नगर निगम के अधिकारियों को बुलाने पर अड़ गए। इसके बाद अधिकारियों से एक सप्ताह के अंदर सभी समस्याओं का समाधान करने का आश्वासन मिलने पर रास्ता खोला।

गुरुग्राम। पटौदी रोड पर स्थित गांव गाडौली के ग्रामीणों ने बुधवार को बिजली-पानी के संकट को लेकर मुख्य रोड पर जाम लगा दिया। ग्रामीण सड़क पर बैठकर विभागों के विरुद्ध नारेबाजी करने लगे। लगभग एक घंटे से ज्यादा समय तक पटौदी रोड पर वाहनों की आवाजाही बाधित रही और गांव में सड़क के दोनों तरफ लंबा ट्रैफिक जाम लग गया।

ट्रैफिक और प्रदर्शन की सूचना पर मौके पर पुलिस पहुंच गई और ग्रामीणों को जाम खोलने के लिए समझाया, लेकिन ग्रामीण अधिकारियों को मौके पर बुलाने के लिए अड़े रहे। बिजली निगम और नगर निगम के अधिकारी गांव में पहुंचे और एक सप्ताह में सभी समस्याओं का समाधान करने का आश्वासन दिया। जिसके बाद ग्रामीणों ने जाम खोल दिया।

बारिश से जलमग्न हो जाती है सड़क

ग्रामीण अनिल गाडौली, नीरज गंडास, कृष्ण, धमेंद्र, मनोज और सतपाल कौशिक ने बताया कि गांव में बिजली के लंबे कट लगते हैं। इसके अलावा मानेसर की तरफ से आने वाला नाला खुला होने के कारण गांव की पूरी सड़क वर्षा के दौरान जलमग्न हो जाती है। गांव में सीवर लाइनें तो बिछा दी गई हैं, लेकिन इनके कनेक्शन नहीं किए गए हैं। तालाब में गंदा पानी भर रहा है और गांव में भी जलभराव हो जाता है।

बादशाहपुर ड्रेन हो जाती है ओवरफ्लो

ग्रामीणों ने बताया कि बादशाहपुर उनके गांव से होकर निकलती है। गांव के आसपास यह ड्रेन कच्ची है और ज्यादा वर्षा होने पर ड्रेन ओवरफ्लो हो जाती है। इसके कारण ड्रेन के साथ लगती सरस्वती कालोनी में जलभराव हो जाता है।

पानी की निकासी नहीं होने से घरों के आगे जलभराव है। ग्रामीणों के जाम लगाने की सूचना के बाद मौके पर बिजली निगम की एसडीओ और नगर निगम के एक्सईएन निजेश कुमार मौके पर पहुंचे और एक सप्ताह में समस्या समाधान का आश्वासन दिया। इसके बाद ग्रामीण सड़क से हट गए और जाम खोल दिया।

आखिर कैसी देश की आजादी के पक्षधर हैं हम?

योगेश कुमार गोयल

आजादी के बाद सामाजिक और आर्थिक पहलू पर देश में कमजोर तबके का स्तर सुधारने की नीयत से लागू आरक्षण के राजनीतिक रूप ने देश को आज उस चौराहे पर लाकर खड़ा कर दिया है, जहां समूचा राष्ट्र रह-रहकर जातीय संघर्ष के बीच उलझता दिखाई देता है।

15 अगस्त का दिन प्रत्येक भारतवासी के लिए गौरव का दिन है क्योंकि इसी दिन भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्ति मिली थी। स्वतंत्रता दिवस को लेकर देश के प्रत्येक नागरिक के दिलोदिमाग में एक अलग ही जज्बा और उत्साह समाहित रहता है। हालांकि वर्षों की गुलामी के बाद गुलामी की इन जंजीरों से मिली आजादी को हम किस रूप में संजोकर रख पा रहे हैं, वह सभी के समक्ष है। देश को आजाद हुए पूरे 77 बरस हो चुके हैं लेकिन आजादी के इन 77 वर्षों में लोकतंत्र के पवित्र स्थल संसद और विधानसभाओं के हालात साल दर साल किस कदर बदले हैं, वह भी किसी से छिपा नहीं है, जहां अभद्रता की सीमा पार करते जनप्रतिनिधि अभद्रता की हर हद पार करते नजर आते हैं। प्रतिवर्ष जब देश की स्वतंत्रता के साथ-साथ राष्ट्र की आन-बान और शान के प्रतीक तिरंगे के नीचे खड़े होकर बहुत से ऐसे जनप्रतिनिधियों को भी देश की रक्षा व प्रगति का संकल्प लेते देखते हैं, जो वर्षभर सरेआम लोकतंत्र की धज्जियां उड़ाते देखे जाते हैं तो मन में यही सवाल उठता है कि आखिर ऐसी संकल्प अदायगी से देश को हासिल क्या होता है? आजादी के दीवानों ने कभी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि जिस देश को आजाद कराने के लिए वे इतनी कुर्बानियां दे रहे हैं, आजादी की उसकी तस्वीर ऐसी हो जाएगी।

हालांकि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश ने विकास के मार्ग पर तेजी से कदम बढ़ाए और विकास के अनेक सोपान तय किए हैं। तकनीकी कौशल हासिल करते हुए देश अंतरिक्ष तक जा पहुंचा है लेकिन महिलाओं से दुर्व्यवहार की घटनाएं जिस प्रकार लगातार बढ़ रही हैं और समाज में अपराधों की तादाद भी बढ़ रही है, ऐसे में देश की गुलामी का दौर देख चुके कुछ बुजुर्ग तो अब कहते सुने भी जाते हैं कि गुलामी के दिन आज की इस आजादी से कहीं बेहतर थे, जहां अपराधों को लेकर मन में भय व्याप्त रहता था किन्तु कड़े कानून बना दिए जाने के बावजूद अपराधियों के मन में अब किसी तरह का भय नहीं दिखता। देश के कोने-कोने से सामने आते अबोध बच्चियों और महिलाओं के साथ हो रहे अपराधों के बढ़ते मामले आजादी की बेहद शर्मनाक तस्वीर पेश कर रहे हैं। देश में महंगाई सुरसा की तरह बढ़ रही है, मध्यम वर्ग के लिए जीवनयापन दिनों-दिन मुश्किल होता जा रहा है, आतंकवाद की घटनाएं पग पसार रही हैं, आरक्षण की आग रह-रहकर देश को जलाती रहती है। ऐसे हालात निश्चित तौर पर देश के विकास के मार्ग में बाधक बनते हैं। हर कोई सत्ता के इर्द-गिर्द ही अपनी-अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकता नजर आ रहा है, कहीं कोई सत्ता बचाने में लगा है तो कहीं कोई इसे गिराने के प्रयासों में। संसद और विधानसभाओं में हंगामेदार तस्वीरें तो अब कोई नई बात नहीं रह गई है।

आजादी के बाद सामाजिक और आर्थिक पहलू पर देश में कमजोर तबके का स्तर सुधारने की नीयत से लागू आरक्षण के राजनीतिक रूप ने देश को आज उस चौराहे पर लाकर खड़ा कर दिया है, जहां समूचा राष्ट्र रह-रहकर जातीय संघर्ष के बीच उलझता दिखाई देता है। स्वार्थपूर्ण राजनीति ने माहौल को इस कदर विकृत कर दिया है, जहां से निकल पाना संभव ही नहीं दिखता। आजादी के बाद के इन साढ़े सात दशकों में महंगाई, भ्रष्टाचार और अपराध इस कदर बढ़ गए हैं कि आम आदमी का जीना दूभर हो गया है। भले ही भ्रष्टाचार पर नकेल कसे जाने के कितने ही ढ़ोल क्यों न पीटे जाते रहें किन्तु वास्तविकता यही है कि आज भी अधिकांश जगहों पर बिना लेन-देन के कार्य सम्पन्न नहीं होते। बड़े नेताओं की तो छोड़ दें, छुटभैया नेताओं की भी चांदी हो चली है। आजादी के बाद लोकतंत्र के इस बदलते स्वरूप ने आजादी की मूल भावना को बुरी तरह तहस-नहस कर डाला है।

आजादी का एक शर्मनाक पहलू यह भी है कि गिने-चुने मामलों को छोड़कर हत्या, भ्रष्टाचार, बलात्कार जैसे संगीन अपराधों से विभूषित जनप्रतिनिधि भी प्रायः सम्मानित जिंदगी जीते रहते हैं। देश के ये बदले हालात आजादी के कौनसे स्वरूप को उजागर कर रहे हैं, विचारणीय है। लोकतंत्र के हाशिये पर खड़ी देश की जनता के लिए इस दिशा में फिर से चिंतन-मंथन करना आवश्यक हो गया है कि वह आखिर किस तरह की आजादी की पक्षधर है? आज की आजादी, जहां तन के साथ-साथ मन भी आजाद है, सब कुछ करने के लिए, चाहे वह वतन के लिए अहितकारी ही क्यों न हो, या उस तरह की आजादी, जहां वतन के लिए अहितकारी हर कदम पर बंदिश हो। आज की आजादी, जहां स्वहित राष्ट्रहित से सर्वोपरि होकर देशप्रेम की भावना को लीलता जा रहा है, या वह आजादी, जहां राष्ट्रहित की भावना सर्वोपरि स्वरूप धारण करते हुए देश को आजाद कराने में गुमनाम लाखों शहीदों के मन में उपजे देशप्रेम का जज्बा सभी में फिर से जागृत कर सके।

– :सौजन्य :–
ईवी ड्राइव द फ्यूचर

ओला इलेक्ट्रिक के बाद अब एथर एनर्जी भी ला रही है आईपीओ

परिवहन विशेष न्यूज

ओला इलेक्ट्रिक के आईपीओ ने लिस्टिंग के बाद बाजार में हलचल मचा दी और निवेशकों को मालामाल कर दिया। कंपनी ने लिस्टिंग के बाद लगातार दो दिन अपर सर्किट मारा और निवेशकों की जेबें भर दीं। अब इस सफलता से उत्साहित ओला की सबसे बड़ी प्रतिद्वंदी एथर एनर्जी ने भी आईपीओ लाने की तैयारी शुरू कर दी है। कंपनी सितंबर की शुरुआत में ही सेबी के पास आईपीओ के दस्तावेज जमा करा सकती है। कंपनी का आईपीओ 450 मिलियन डॉलर (करीब 3700 करोड़ रुपये) का हो सकता है। खास बात यह है कि एथर एनर्जी मंगलवार, 13 अगस्त को ही यूनिकॉर्न बन गई है और इसके साथ ही आईपीओ लाने की मंशा भी सामने आ गई है।

देश की चौथी सबसे बड़ी इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर निर्माता कंपनी एथर एनर्जी ने अपने निवेशक नेशनल इन्वेस्टमेंट एंड इंफ्रास्ट्रक्चर फंड से 600 करोड़ रुपये और जुटाए हैं। इस फंडिंग के साथ ही कंपनी अब 1.3 बिलियन डॉलर के वैल्यूएशन के साथ यूनिकॉर्न लिस्ट में शामिल हो गई है। मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि कंपनी ने IPO के लिए एचएसबीसी, जेपी मॉर्गन और नोमुरा को भी नियुक्त किया है। एथर एनर्जी की स्थापना तरुण मेहता और स्वप्निल जैन ने की थी।

टाइगर ग्लोब मैनेजमेंट, सचिन बंसल और बिन्नी बंसल एथर एनर्जी के प्रमुख निवेशकों में से हैं। फिलहाल कंपनी की तमिलनाडु में दो मैन्युफैक्चरिंग यूनिट हैं। तीसरा प्लांट जल्द ही महाराष्ट्र में खुलने वाला है। यही वजह है कि कंपनी अब आईपीओ के बारे में गंभीरता से सोच रही है। कंपनी का नाम भी एथर एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड से बदलकर एथर एनर्जी लिमिटेड किया जा रहा है। बाजार की स्थितियों को देखते हुए कंपनी का आईपीओ इस वित्त वर्ष की दूसरी छमाही में आ सकता है। आईपीओ के बाद कंपनी का वैल्यूएशन 2 अरब डॉलर हो जाएगा।

इस साल देश में ईवी की बिक्री में 66 फीसदी का इजाफा हो सकता है। देश में ईवी बैटरी की मैन्युफैक्चरिंग बढ़ने से उत्पाद सस्ते होंगे और उनकी बिक्री भी बढ़ेगी। इस सेक्टर में ओला इलेक्ट्रिक 35 फीसदी मार्केट शेयर के साथ टॉप पर है। एथर एनर्जी के पास 9 फीसदी मार्केट शेयर है।

जापान में दौड़ेगी मेक-इन-इंडिया एसयूवी

परिवहन विशेष न्यूज

देश की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड ने मंगलवार 13 अगस्त से जापान को अपनी 'मेड-इन-इंडिया' एसयूवी फ्रोंक्स का निर्यात शुरू कर दिया है। फ्रोंक्स मारुति सुजुकी की जापान में लॉन्च होने वाली पहली एसयूवी होगी। कंपनी ने जानकारी देते हुए बताया कि फ्रोंक्स को मारुति सुजुकी के अत्याधुनिक गुजरात प्लांट में खास तौर पर तैयार किया गया है। शुरुआत में जापान के लिए 1,600 से ज्यादा फ्रोंक्स एसयूवी की पहली खेप गुजरात के पिपावाव बंदरगाह से रवाना हो चुकी है।

मारुति सुजुकी इंडिया के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी हिसाशी ताकेउची ने कहा, '' जापान दुनिया के सबसे अधिक गुणवत्ता-सचेत और उन्नत मोटर वाहन बाजारों में से एक है। जापान को हमारा निर्यात मारुति सुजुकी की विश्वस्तरीय वाहनों के निर्माण की क्षमता का प्रमाण है, जो अत्याधुनिक तकनीक, असाधारण प्रदर्शन, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त सुरक्षा तथा गुणवत्ता मानकों की मिसाल है।'' ऑटो एक्सपो 2023 में वैश्विक स्तर पर पेश किए जाने के बाद फ्रोंक्स को भारत में 24 अप्रैल 2023 को पेश किया गया था।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने मंगलवार, 13 अगस्त को सोशल मीडिया पर अपने पोस्ट में कहा, ₹समय बदल रहा है। यह वास्तव में गर्व का क्षण है क्योंकि मारुति सुजुकी की 1600 से अधिक 'मेड इन इंडिया' एसयूवी की खेप पहली बार जापान को निर्यात की जा रही है। मोदी सरकार ने पिछले एक दशक में भारतीय विनिर्माण उद्योग को बढ़ावा देने के लिए कई नीतियां लागू की हैं। स्थानीय स्तर पर विश्व स्तरीय गुणवत्ता वाले उत्पादों के उत्पादन पर जोर देने के साथ, इसने 'ब्रांड इंडिया' को वैश्विक स्तर पर एक जाना-माना नाम बनने में मदद की है।₹

वर्ष 2016 में बलेनो के बाद फ्रॉन्क्स मारुति सुजुकी का दूसरा मॉडल है जिसे जापान को निर्यात किया जा रहा है। मारुति सुजुकी इंडिया के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) हिसाशी ताकेउची ने कहा, ''जापान दुनिया में गुणवत्ता को लेकर सबसे सजग और उन्नत वाहन बाजारों में से एक है। जापान को हमारा निर्यात मारुति सुजुकी की विश्वस्तरीय वाहनों का निर्माण करने की क्षमता का प्रमाण है।'' मारुति ने फ्रान्क्स को पिछले साल अप्रैल में पहली बार पेश किया था। इसने बड़ी तेजी से लोकप्रियता हासिल कर ली और 10 माह के भीतर ही सबसे तेज एक लाख इकाई की बिक्री दर्ज करने वाली देश का पहला मॉडल बन गई।

टाटा क्लासिक मोटर्स पर हुआ न्यू प्रीमियम कर्व ईवी की लांचिग कार्यक्रम

परिवहन विशेष न्यूज

अलवर में टाटा मोटर्स पैसेंजर व्हीकल के अधिकृत डीलर क्लासिक मोटर्स पर टाटा की न्यू प्रीमियम एसयूवी कर्व ईवी की लांचिग की गई। इस मौके पर ब्रिगेडियर सुखबीर सिंह, कम्पनी के एमडी संजीव गुप्ता, पुनीत गुप्ता, गौरव गुप्ता, जीएम अमित शर्मा, फायनेंसर और अन्य लोग उपस्थित रहे। इस व्हीकल की शुरुआती कीमत 17 लाख 49 हजार रुपए रखी गई है। इसमें 55 किलोवाट की आईपी 67 रेटेड बैटरी के साथ 585 किमी का रेंज एआरएआई द्वारा क्लेम किया गया है।

इसमें 6 एयरबैग का, ऑल फोर व्हील ड्राइव, डिस्क ब्रेक, 5 स्टार सेफ्टी रेटिंग और 500 लीटर बूट स्पेस, लेवल 2 का एडास सिस्टम आदि फीचर है। इसे लोगों के द्वारा बहुत पसंद किया गया है। यह पेट्रोल और डीजल वेरियंट में भी उपलब्ध है।

अपडेटिड क्लासिक 350 को मनचाहे कलर ऑप्शन में खरीद सकेंगे ग्राहक, ऐसे काम करेगा कस्टमाइजेशन प्लान

परिवहन विशेष न्यूज

कंपनी ने फैक्ट्री से ही कई कस्टमाइज्ड क्लासिक 350 मोटरसाइकिलों को प्रदर्शित किया जो अब इंडस्ट्री में पहली बार ग्राहकों के लिए उपलब्ध हैं। रॉयल एनफील्ड फैक्ट्री कस्टम प्रोग्राम अभी नई क्लासिक 350 तक ही सीमित है लेकिन भविष्य में इसे अन्य ब्रांड मॉडल तक बढ़ाया जा सकता है। ग्राहकों को ब्रांड के डिजाइन स्टूडियो में तमिलनाडु में रॉयल एनफील्ड के थिरुवोट्टियूर प्लांट में जाना होगा।

नई दिल्ली। रॉयल एनफील्ड ने हाल ही में इंडियन मार्केट के अंदर Updated Classic 350 पेश की। RE ने नई क्लासिक 350 के डेब्यू के मौके पर अपना नया 'फैक्ट्री कस्टम' प्रोग्राम लॉन्च किया है।

कस्टमाइज्ड Classic 350

कंपनी ने फैक्ट्री से ही कई कस्टमाइज्ड क्लासिक 350 मोटरसाइकिलों को प्रदर्शित किया, जो अब इंडस्ट्री में पहली बार ग्राहकों के लिए उपलब्ध हैं। रॉयल एनफील्ड फैक्ट्री कस्टम प्रोग्राम अभी नई क्लासिक 350 तक ही सीमित है, लेकिन भविष्य में इसे अन्य ब्रांड मॉडल तक बढ़ाया जा सकता है।

नई रॉयल एनफील्ड फैक्ट्री कस्टम प्रोग्राम आपको फैक्ट्री से ही अपनी क्लासिक 350 को कस्टमाइज करने की सुविधा देता है। कस्टम बदलाव इसे शुरू से ही सड़क पर चलने लायक बना देंगे, जिससे ग्राहकों के लिए बड़ी परेशानी खत्म हो जाएगी।

क्या है पूरा प्रोसेस?

ग्राहकों को ब्रांड के डिजाइन स्टूडियो में तमिलनाडु में रॉयल एनफील्ड के थिरुवोट्टियूर प्लांट में जाना होगा। फिर आप बाइक पर उपलब्ध स्टैंडर्ड 7 रंग विकल्पों के अलावा एक डिटेल्ड रंग पैलेट से अपनी पसंद का शेड चुन सकते हैं।

आप अपने रंगों को कस्टम मिक्स भी कर सकते हैं। फिनिश चुन सकते हैं और अपनी मोटरसाइकिल में एक अनूठा स्पर्श जोड़ने के लिए विशेष डिकल्स या कंट्रास्ट फिनिश फ्रेम भी चुन सकते हैं। फैक्ट्री से सीधे आपकी पसंद के हिसाब से मोटरसाइकिल डिलीवर की जाए।

चंडीगढ़ की पुरीसंस दे रही है स्वतंत्रता दिवस और रक्षाबंधन के उपलक्ष्य पर काइनेटिक ग्रीन ई-स्कूटर पर छूट

परिवहन विशेष न्यूज

मशहूर ई-स्कूटर कंपनी काइनेटिक ग्रीन के डीलर ने 78वें स्वतंत्रता दिवस और राखी के लिए खास ऑफर पेश किया है। इस ऑफर के तहत ग्राहक कंपनी की लेटेस्ट काइनेटिक ग्रीन के ई-स्कूटर पर 2,500 रुपये की फ्लैट छूट का लाभ उठा सकते हैं व मुफ्त एक्सेसरीज और कई अन्य छूट पा सकते हैं।

यह विशेष ऑफर 14 अगस्त से 20 अगस्त तक उपलब्ध है। सीमित समय के इस प्रमोशन का उद्देश्य 78वें स्वतंत्रता दिवस और राखी का जश्न मनाते हुए ₹पेट्रोल से आजादी₹ दिलाना है। डीलर इस ऑफर के जरिए इलेक्ट्रिक स्कूटर अपनाने के लिए जागरूक कर रही है। यह ऑफर केवल चंडीगढ़ के पुरीसंस डीलरशिप पर उपलब्ध हैं।

सुधा मूर्ति ने राज्यसभा में इलेक्ट्रिक वाहनों से जुड़े मुद्दे पर रखी अपनी बात

परिवहन विशेष न्यूज

राज्यसभा सांसद सुधा मूर्ति ने बैटरी प्रबंधन, चार्जिंग स्टेशन और बिजली उत्पादन पर मुख्य ध्यान देते हुए बेहतर ईवी इंफ्रास्ट्रक्चर की वकालत की। उन्होंने इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर, खासकर चार्जिंग सिस्टम तक आसान पहुंच की अपील की।

सुधा मूर्ति एक प्रसिद्ध परोपकारी, लेखिका और सामाजिक उद्यमी हैं। उन्होंने भारत में ईवी इंफ्रास्ट्रक्चर को बढ़ाने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की वकालत की, जिसमें बैटरी प्रबंधन, चार्जिंग स्टेशन और बिजली उत्पादन जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर जोर दिया।

उन्होंने परिवहन मंत्रालय की देखरेख में व्यापक और सुव्यवस्थित सड़क नेटवर्क का हवाला देते हुए भारत के परिवहन क्षेत्र में हुई प्रगति को स्वीकार करते हुए राज्यसभा के पटल पर अपनी बात रखी।

आगे बढ़ते हुए उन्होंने सड़क परिवहन से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों की ओर इशारा किया जो 40% प्रदूषण में योगदान करते हैं। उन्होंने इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर बदलाव पर जोर दिया, जो प्रदूषण और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने का वादा करते हैं।

सुधा मूर्ति ने केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी का ध्यान ईवी अपनाने से जुड़ी व्यवहार्यता और समस्याओं के समाधान के लिए कई प्रमुख क्षेत्रों की ओर आकर्षित किया।

रेंज एंग्जायटी को लेकर संबोधित करते हुए कहा कि रेंज एंग्जायटी को वर्तमान में ईवी उपयोगकर्ताओं के लिए सबसे बड़ी बाधाओं में से एक माना जाता है। सरल शब्दों में रेंज एंग्जायटी, अगला चार्जिंग स्टेशन खोजने से पहले बैटरी खत्म हो जाने का डर है। उन्होंने इस डर को कम करने के लिए सुलभ चार्जिंग प्वाइंट की संख्या बढ़ाने का आह्वान किया। इस डर को कम करने के लिए, सुलभ चार्जिंग प्वाइंट की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए और लंबी कतारों को प्रबंधित करने के लिए समाधान होने चाहिए।

बिजली उत्पादन और वितरण को लेकर कहा कि चार्जिंग स्टेशनों के संचालन की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए बेहतर बुनियादी ढांचे के साथ बिजली उत्पादन को बढ़ाने की जरूरत है। ईवी के लिए विश्वसनीय और निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए हाइड्रो, थर्मल या परमाणु स्रोतों के माध्यम से इसे प्राप्त किया जा सकता है।

कुशल चार्जिंग व्यवस्था को लेकर सुधा मूर्ति ने उल्लेख किया कि कैसे ठंडा मौसम बैटरी की चार्जिंग दक्षता के साथ-साथ इसके प्रदर्शन को भी प्रभावित कर सकता है। इसलिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि बैटरी लचीली हों और चार्जिंग सुविधाएँ मौसम की स्थिति को संभालने के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित हों।

बैटरी प्रबंधन प्रणाली (बीएमएस) के बारें में सदन पटल पर अपनी बात रखते हुए कहा कि कुशल प्रदर्शन और इष्टतम परिणामों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली बैटरी प्रबंधन प्रणाली (बीएमएस) और टिकाऊ बैटरी महत्वपूर्ण हैं। इस उद्देश्य के लिए सुधा मूर्ति ने भारत में स्थानीय स्तर पर बैटरी बनाने का विचार प्रस्तावित किया, जिसमें सुझाव दिया गया कि इससे देश के भीतर आत्मनिर्भरता और नवाचार को बढ़ावा मिल सकता है।

सुधा मूर्ति ने सरकार और निजी क्षेत्र दोनों से चार्जिंग स्टेशनों का एक व्यापक और सुलभ नेटवर्क स्थापित करने में सहयोग करने का आग्रह किया है। वह शहरी केंद्रों में तेज़ चार्जिंग स्टेशनों और आवासीय क्षेत्रों में धीमी चार्जिंग प्वाइंट की तैनाती में तेज़ी लाने के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी की वकालत करती हैं, जिससे ईवी चार्जिंग पारंपरिक वाहन में ईंधन भरने जितना ही सुविधाजनक हो सके।

इतिहास में गुमनाम जंगे आजादी के योद्धा

उन क्रांतिवीरों के नाम पर कोई बड़ा शिक्षण संस्थान, खेल स्टेडियम या राष्ट्रीय राजमार्ग भी नहीं है। प्रश्न यह है कि क्या बर्तानिया हुकूमत के खिलाफ लडने वाले वजीर राम सिंह पठानिया, मेजर दुर्गामल व कैप्टन दल बहादुर के बलिदान से युवा पीढ़ी परिचित है

प्रताप सिंह पटियाल

यौम-ए-आजादी के मौके पर देश के सभी राज्यों में रंगारंग कार्यक्रमों का आयोजन होगा। देशभक्ति के नगमों की सरगम गूंजेगी। जंगे आजादी में अंग्रेजों से लोहा लेने वाले कुछ इंकलाबी चेहरों तथा आजादी की तहरीक में शमूलियत अख्तियार करने वाले सियासी रहनुमाओं का जिक्र समाचार पत्रों से लेकर न्यूज चैनलों तक होगा।

बर्तानिया सल्तनत की दो सौ वर्षों की गुलामी के बाद हिंदोस्तान की करोड़ों आवाम ने 15 अगस्त 1947 को जश्न-ए-आजादी का इजहार किस कदर किया था, आजादी की मंजर-ए-शब के उन खूबसूरत लम्हों को लफ्जों में बयान नहीं किया जा सकता। पंद्रह अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाएगा। यौम-ए-आजादी के मौके पर देश के सभी राज्यों में रंगारंग कार्यक्रमों का आयोजन होगा। देशभक्ति के नगमों की सरगम गूंजेगी। जंगे आजादी में अंग्रेजों से लोहा लेने वाले कुछ इंकलाबी चेहरों तथा आजादी की तहरीक में शमूलियत अख्तियार करने वाले सियासी रहनुमाओं का जिक्र समाचार पत्रों से लेकर न्यूज चैनलों तक होगा। लेकिन सन-1947 से पूर्व जब मुल्क की आवाम ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध आजादी के लिए जद्दोजहद कर रही थी, उस वक्त मौजूदा पाकिस्तान व बांग्लादेश भी हिंदोस्तान का ही हिस्सा थे। उस समय अविभाजित भारत की जनसंख्या लगभग चालीस करोड़ से अधिक थी। अतः विवेचना इस विषय पर भी होनी चाहिए कि बर्तानिया से तशरीफ लाए चंद अंग्रेजों ने अविभाजित भारत की लगभग 584 रियासतों तथा करोड़ों आवाम को अपना गुलाम कैसे बना लिया था। विश्व प्रसिद्ध भारतीय शिक्षा प्रणाली से लेकर तमाम व्यवस्थाओं पर अंग्रेजी निजाम किस तरीके से काबिज हो गया। हिंदोस्तान की सरजमीं पर बर्तानिया सल्तनत की संगे बुनियाद इतनी मजबूत कैसे हुई थी कि उसको उखाडने के लिए एक मुद्दत तक जद्दोजहद करनी पड़ी। गुलामी की उन जंजीरों को तोडने के लिए कई इंकलाबी तहरीकें चली, सैंकड़ों विद्रोह हुए। हजारों की तादाद में आजादी के परवानों ने शहादत को गले लगा लिया। अंग्रेजों के खिलाफ सन-1857 का विद्रोह भी हुआ जिसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा जाता है। वह आखिर असफल कैसे हुआ? देश के मुस्तकबिल युवा पीढ़ी को अपने मुल्क के उस निजाम की नाकामी से भी मुखातिब करवाना चाहिए।

भारत के लाखों सैनिकों ने 'ब्रिटिश इंडियन आर्मी' का हिस्सा बनकर अंग्रेज बादशाही के लिए पहला विश्व युद्ध (1914-1918) इस उम्मीद से लड़ा था कि जंगे अजीम में बैरूने मुल्कों के महाज पर अंग्रेजों को जीत दिलाकर बर्तानिया का परचम बुलंद करेंगे तो युद्ध समाप्ति के पश्चात शायद अंग्रेज हुकूमत से भारत आजाद हो जाएगा। प्रथम विश्व युद्ध में सत्तर हजार से अधिक भारतीय सैनिक विदेशी भूमि पर शहीद हुए। हजारों सैनिक बुरी तरह जख्मी हुए। ग्यारह भारतीय सैनिकों ने 'विक्टोरिया क्रॉस' जैसा सर्वोच्च वीरता पदक अपने नाम करके दुनिया को अपनी दास्तान-ए-सुजात से मुखातिब करवाया था। लेकिन लाखों सैनिकों की कुर्बानियों के बावजूद भारत को आजादी नसीब नहीं हुई। सन-1939 में दूसरी जंगे अजीम का आगाज हो गया। ब्रिटिश साम्राज्य के परचम तले लाखों भारतीय सैनिक दोबारा उसी उम्मीद से रणभूमि में भेजे गए। मगर दूसरी जंगे अजीम के दौरान हजारों भारतीय सैनिक अंग्रेजों से बगावत करके 'सुभाष चंद्र बोस' के नेतृत्व में 'आजाद हिंद फौज' का हिस्सा बन गए। राष्ट्रवाद के जज्बात रखने वाले आजाद हिंद फौज के हजारों सैनिक वतन-ए-अजीज की आजादी के लिए बलिदान हुए, लेकिन आजाद हिंद फौज को देश की तत्कालीन सियासी जमातों का समर्थन हासिल नहीं हुआ। जंगे आजादी के लिए कोई तहरीक हो, सशस्त्र संघर्ष या आजाद हिंद फौज की कुर्बानियां, वीरभूमि हिमाचल प्रदेश के रणबांकुरों का जिक्र किए बिना आजादी का इतिहास भी अधूरा रहेगा। आजादी के लिए सन-1857 के विद्रोह तथा सन-1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' पर शैक्षिक पाठयक्रम से लेकर सियासत तक खूब चर्चा होती है, लेकिन क्या मुल्क की आवाम को इस बात का ईल्म है कि सन-1857 के स्वतंत्रता संग्राम से दस वर्ष पूर्व 'नूरपुर' रियासत के वजीर 'राम सिंह पठानिया' ने सन-1846 में अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष को अंजाम देकर अपने फौलादी इरादे जाहिर कर दिए थे। राम सिंह पठानिया के नेतृत्व में नूरपुर रियासत के युवा सैनिकों द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ बगावत की उस चिंगारी ने भारत को मुस्तकबिल में आजादी की राह दिखाई थी। मगर अपनी ताकत-ए-परवाज से अंग्रेज हुकूमत की बुनियाद हिलाने वाले राम सिंह पठानिया की शूरवीरता का जिक्र किसी राष्ट्रीय न्यूज चैनल या राष्ट्रीय राजनीति के मंच पर कभी नहीं हुआ। नतीजतन स्वतंत्रता का ध्वजारोहण करने वाले रणबांकुरे के शौर्य पराक्रम पर गुमनामी का तमस छा गया। जश्न-ए-आजादी के मौके पर लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री का संबोधन हमेशा चर्चा का मरकज बनता है। मगर आजाद हिंद फौज के हिमाचली जांबाज मेजर 'दुर्गामल' तथा कैप्टन 'दल बहादुर थापा' को अंग्रेजों ने युद्धबंदी बनाकर इसी लाल किले में फांसी की सजा दी थी। अंग्रेजों के खिलाफ लडने वाले 'सरदार-ए-जंग' एजाज से सरफराज आजाद हिंद सेना के कर्नल 'मेहर दास' कैप्टन 'राम सिंह ठाकुर' व फांसी के फंदे को चूमने वाले दुर्गामल तथा दल बहादुर थापा को राज्य या राष्ट्रीय स्तर पर उनके बलिदान के मुताबिक सम्मान भी नहीं मिला।

न ही सूबे के हुक्मरानों ने अपने आजादी के नायकों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने की काशिश की। नतीजतन सरफरोशी की तमन्ना रखने वाले जिन जांबाजों ने मुल्क की आजादी के लिए मकतल को अपने रक्त से सुर्खरू कर दिया, वो योद्धा इतिहास में गुमनाम हो गए। उन क्रांतिवीरों के नाम पर राज्य या देश में कोई बड़ा शिक्षण संस्थान, खेल स्टेडियम या राष्ट्रीय राजमार्ग भी नहीं है। प्रश्न यह है कि क्या हिंदोस्तान की आजादी के लिए बर्तानिया हुकूमत के खिलाफ लडने वाले वजीर राम सिंह पठानिया, मेजर दुर्गामल व कैप्टन दल बहादुर के बलिदान से युवा पीढ़ी परिचित है? अफसोस! जिनका मंजिल-ए-मकसूद आजादी था, वो इंकलाबी चेहरे तख्ता-ए-दार पर झूल गए, मगर मंजिल उन्हें मिली जो शरीक-ए-सफर न थे। आजादी के परवानों के शौर्य की विरासत सहेजने के लिए उनकी जीवनी शिक्षा पाठ्यक्रम में शामिल होनी चाहिए। ऐसे योद्धाओं के नाम पर स्मारकों का निर्माण किया जाना चाहिए तथा युवा पीढ़ी को शिक्षित किया जाना चाहिए।

संपादकीय

टुकड़े-टुकड़े परिसर

शिक्षा का मूल्यांकन करता राष्ट्रीय सर्वेक्षण देश के सौ संस्थानों में से हिमाचल के केवल तीन को चुनता है, जबकि एनआईटी हमीरपुर अपने अस्तित्व के फलक पर लुढक़ कर निराश कर रहा है। आईआईटी मंडी 33वें, आईआईएम सिरमौर 57वें, तो शूलिनी यूनिवर्सिटी 70वें स्थान पर विराजित होकर वो कार्य कर रहे हैं, जहां राज्य के अन्य विश्वविद्यालय सजावटी सिद्ध हो रहे हैं। यह दीगर है कि अपनी कैटेगिरी के राष्ट्रीय स्तर पर नौणी विश्वविद्यालय 18वें, तो कृषि विश्वविद्यालय 19वें रैंक पर कमोबेश अपनी हैसियत का बचाव करते हुए दिखाई देते हैं, वरना राष्ट्रीय पैमानों से दरकिनार हुई शिमला यूनिवर्सिटी की औकात को क्या कहें और मंडी विश्वविद्यालय का नाम ही क्यों लें। ले जाएं हिमाचल के सारे नेता और निचोड़ दें केंद्रीय विश्वविद्यालय को देहरा के सियासी आखेट में। न दें जदरांगल परिसर को घोषित तीस करोड़। बांट दें इस विश्वविद्यालय के टुकड़े-टुकड़े परिसर, लेकिन अंततः शिक्षा के बीज बोएगा कौन। शिक्षा कैसे हलाल हो सकती है, इसका उदाहरण है केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला और इस जीत के लिए अनुराग ठाकुर, किशन कपूर, प्रेम कुमार धूमल, जयराम ठाकुर और अब सुखविंदर सिंह सुक्खू को बधाई। उन तमाम कुलपतियों को भी बधाई जो प्रतिष्ठित शिमला विश्वविद्यालय को इस हालात में पहुंचा चुके हैं कि आज देश के सामने यह परिसर शर्मिंदा है।

हम फर्जी श्लाघा के किरदार हैं, इसलिए मंडी में विश्वविद्यालय को लेकर आज तक पकी खिचड़ी पर खुश हैं। आईआईटी मंडी और सिरमौर के आईआईएम के चमकने में हिमाचल कोई किरदार नहीं और न ही शूलिनी यूनिवर्सिटी के निजी प्रयास में कोई सरकार हकदार है। यही वजह है कि अब मात्रात्मक शिक्षा के प्रसार को ठुकरा कर हिमाचल की प्रतिभा राज्य की पाठ्य सामग्री और पाठ्यक्रमों से कहीं दूर अपने लिए गुणवत्ता की छांव ढूंढ रही है। अगर ढांचा अच्छा होता तो ये मीनारें यूं न टूटतीं, तेरी बस्ती में अब सन्नाटों के सिवा है क्या। कमोबेश हिमाचल के सभी कालेजों और विश्वविद्यालयों में शिक्षा का यह सत्र घाटे का है, नकारात्मकता का है, क्योंकि सैकड़ों की संख्या में सीटें खाली हैं। शिमला विश्वविद्यालय तक को हाथ जोड़ कर छात्रों का अभिनंदन करना पड़ रहा है। इसी बीच हिमाचल के राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने सरकारी विश्वविद्यालयों को शिक्षा में गुणवत्ता और आत्मनिर्भर परिसर बनने का मूल मंत्र दिया है। हम शिक्षित तो हो रहे हैं, लेकिन पढ़े-लिखे साबित नहीं हो रहे हैं। आज भी कृषि विश्वविद्यालय का असर खेत में नहीं, तो चिलगोजे की गांठ पर नौणी विश्वविद्यालय के शोध का कोई परिणाम नहीं। इस दौरान लोगों ने स्वयं खेती-खेत और बागबानी-बागीचे को बदल दिया है। प्रदेश में हजारों निजी नर्सरियां और बीज बिक्री केंद्र अब किसान-बागबान की मेहनत को नए अरमान दे रहे हैं।

आईआईटी मंडी ने नवाचार में आठवां रैंक हासिल किया, तो उसकी फैकल्टी को प्रणाम, वरना हिमाचल के अपने संस्थानों में ऐसा माहौल ही नहीं बना कि छात्र स्वरोजगार, स्वावलंबन, नए शोध-नए प्रयोग, इनोवेशन और उद्यमशीलता में आगे बढ़ें। आज भी हम मुफ्त के राशन, सरकारी नौकरी के भाषण और राजनीतिक लांछन में बच्चों को शिक्षा का मूल पाठ नहीं पढ़ा पा रहे, वरना हमारे इंजीनियरों में औद्योगिक उत्पादकता बढ़ाने का दम होता। स्टार्टअप योजना के तहत पूरा प्रदेश आईटी का हब होता। हमारे डाक्टर अब तक हिमाचल को मेडिकल टूरिज्म की सौगात बना चुके होते, लेकिन अफसोस हमारी शिक्षा का दोष बनकर हर हिमाचली मरीज को दूसरे राज्यों के संस्थानों में जिंदगी की भीख मांगनी पड़ रही है। कभी हमने मंचों पर कहा कि प्रदेश शिक्षा का हब बनेगा, लेकिन आज हमारी किताब के हर पन्ने को शिकायत है, शिक्षा के हर शब्द से पढ़ाई के अर्थ बिखर रहे हैं।

राय

हिंडनबर्ग के नए आरोप

'हिंडनबर्ग रिसर्च' कोई प्रामाणिक, वेद-पुराण सरीखी कंपनी नहीं है कि जिस पर भारत आंख मूंद कर विश्वास कर सके। उसके अपने हित और मुनाफे हैं, जिनके लिए वह किसी भी औद्योगिक समूह अथवा संवैधानिक हस्ती को निशाना बनाती रही है। हिंडनबर्ग की अपनी विश्वसनीयता अमरीका में ही सवालिया है, उसके खिलाफ जांच जारी है, लेकिन हमारी सियासत ऐसी है मानो हिंडनबर्ग की रपट के जरिए कोई 'रहस्य' खुल गया हो! हिंडनबर्ग की भारत में पहली रपट करीब 18 माह पूर्व सार्वजनिक हुई थी। उसमें अडानी समूह निशाने पर था। उसकी कंपनियों में शेयरों की हेराफेरी और धनशोधन सरीखे सवालों के जरिए आरोप लगाए गए थे। रपट का असर ऐसा हुआ कि अडानी की संपत्ति 120 अरब डॉलर से घटकर 39.9 अरब डॉलर तक लुढक़ आई थी। समूह के शेयर औंधे मुंह गिरे थे। तब समूह के चेयरमैन गौतम अडानी दुनिया के तीसरे सबसे अमीर उद्योगपति थे और एशिया में वह नंबर वन पर थे। बहुत नुकसान हुआ था, लेकिन समूह को कलंकित नहीं किया जा सका। मामला सर्वोच्च अदालत तक पहुंचा और सेबी की जांच को 'उचित' माना गया। अदालत ने कहा कि सीबीआई या एसआईटी जांच की जरूरत नहीं है, प्रतिभूति और बाजार की नियामक सेबी ही सक्षम एजेंसी है। बहरहाल हिंडनबर्ग ने एक बार फिर अपनी रपट जारी की है। उसमें अडानी समूह के साथ-साथ सेबी प्रमुख माधवी पुरी बुच को भी निशाने पर लिया है। आरोप सही हैं या पूर्वाग्रही हैं, सेबी प्रमुख और उनके पति का स्पष्टीकरण कितना प्रामाणिक है, हम उन पर टिप्पणी नहीं कर सकते, क्योंकि यथार्थ हमारे सामने नहीं है। हम उनके निवेश को भी नहीं जानते, लेकिन कुछ भी जाने बिना ही कांग्रेस ने इसे 'महाघोटाला' करार दे दिया है और संयुक्त संसदीय कमेटी (जेपीसी) की जांच की मांग की है। विपक्ष के नेता चिल्लाने लगे हैं कि सेबी की भी जांच की जाए।

उसकी कार्यप्रणाली संदिग्ध है। यही नहीं, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने तो सवाल किया है कि सेबी प्रमुख का इस्तीफा अभी तक क्यों नहीं लिया गया? यदि बाजार में छोटे निवेशकों का नुकसान होगा, तो कौन जिम्मेदार होगा? इन सवालों से बेपरवाह देश की शेयर मार्केट ने इस बार हिंडनबर्ग की रपट को सिरे से खारिज कर दिया है। सेंसेक्स सिर्फ 56.99 अंक और निफ्टी 20.50 अंक ही लुढक़े, अलबत्ता निवेशकों का बाजार यथावत रहा। सवाल हिंडनबर्ग की रपट पर हैं कि बाजार तो शांत और स्थिर है, लेकिन देश की सियासत क्यों उबल रही है? हिंडनबर्ग आने वाले समय में भारत के प्रधानमंत्री और प्रधान न्यायाधीश सरीखे संवैधानिक चेहरों पर भी कालिख पोत सकती है। किस-किस के इस्तीफों और जेपीसी की मांग करते रहेंगे? क्या हिंडनबर्ग ही भारत की आर्थिक गतिविधियों और नियामक संस्थाओं की कसौटी है, जिस पर सभी की ईमानदारी को आंका जा रहा है? अडानी समूह के साथ कांग्रेस की राज्य सरकारें तो हजारों करोड़ रुपए की परियोजनाओं पर समझौते करती रही हैं, लेकिन हिंडनबर्ग की रपट आते ही पार्टी के नेता अडानी को 'अर्थव्यवस्था का खलनायक' मानने लगते हैं। यह दोगलापन स्वीकार्य नहीं है। यदि हिंडनबर्ग इतनी प्रामाणिक कंपनी है, तो कांग्रेस नेतृत्व की यूपीए सरकारों के दौरान कई घोटाले सामने आए, उन पर रपटें क्यों नहीं प्रकाशित की गईं?

क्या यह मोदी-विरोध और भारत-विरोध का ही एजेंडा है? भारत में एक रपट के आधार पर न तो आर्थिक अराजकता और अस्थिरता की आशंका है और न ही ऐसी विदेशी ताकतें कामयाब होंगी। भाजपा और सरकार निश्चिंत रहें, लेकिन ऐसी निरंकुश और फर्जी रपटें जारी की जाती रहेंगी, उसके मद्देनजर सरकार की रणनीति क्या है? हिंडनबर्ग ने एक बार फिर हरकत की है, इस पर चुप नहीं बैठा जा सकता, जैसा कि वित्त मंत्रालय का बयान आया है।

मस्त मस्त, पंद्रह अगस्त'

अशोक गौतम

इन्हीं मेरे परम मित्रों में से कल एक का फोन आया। बिन हालचाल पूछे ही जनाब सीधे मुद्दे पर आए। वे काम ही ऐसी पोस्ट पर करते हैं जहां भूमिका बांधना मतलब समय बरबाद करना, 'और यार! पंद्रह अगस्त का क्या प्रोग्राम है?' 'पर वह कल है। कल का कल ही देखेंगे', मैंने उनसे कहा तो वे गुर्राते बोले, 'कल के लिए प्लान आज ही करना पड़ेगा। एट द इलेवन्थ आवर कम से कम छुट्टी वाले दिन को प्लान करने की मेरी कतई आदत नहीं।' 'मतलब?' 'मतलब ये कि छुट्टी का एक एक पल मेरे जैसों को मत पूछो कितना कीमती होता है।' 'तो ऐसा करते हैं कि ऐसा करते हैं कि।' मैं भी तय नहीं कर पा रहा था कि कल पंद्रह अगस्त की छुट्टी में क्या खास किया जाए कि पंद्रह अगस्त यादगार बन जाए। मैं हर छुट्टी को यादगार बनाने की फेवर में खड़ा होने वाला जीव हूं। फिर याद आया कि सरकार ने जो कल ऑफिस आना जरूरी कर दिया तो? तो काहे का पंद्रह अगस्त! पंद्रह अगस्त वाले दिन भी ऑफिस, 'तो ऐसा करते हैं कि।' 'क्या करते हैं? साफ-साफ बताओ यार कि कल का क्या प्लान डिजाइन किया है तुमने?' मित्र ने फोन पर साफ-साफ बताने के निर्देश दिए तो मैंने तनिक अपना दिमाग खोला। मेरा दिमाग ऑफिस में तो बहुधा छुट्टी पर रहता है, पर छुट्टी वाले दिन तो पूरी तरह छुट्टी पर रहता है। फिर भी मित्र ने पूछा तो आखिर जोर मारकर दिमाग खोलना पड़ा, 'तो सबसे पहले तो ऐसा करेंगे कि सुबह ही हम सब घर से निकल जय हिंद के नारे लगाते किसी गंदे से ठेले पर चना पूड़ी खाएंगे। उसके बाद कुछ देर सब मिलकर गप्प शप्प मारेंगे।

मौसम ठीक रहा तो फिर कल्लू चाय वाले की रेहड़ी के पीछे ताश खेलेंगे। बहुत दिन हो गए यार! ताश खेले बिना। अब तो ये भी भूलने लगा हूं कि ताश में कितने पत्ते होते हैं। जब ताश खेलते खेलते जी भर जाएगा तो चारों कहीं होटल पर लंच करने निकल पड़ेंगे। होटल का गंद खाए बिना भी महीनों हो गए हैं। दिमाग की एकरसता तोडने के लिए बीच बीच में गंद खाना बहुत जरूरी होता है।' 'उसके बाद?' बंधु ने दूसरी ओर से अवाक होते पूछा तो मैं फिर कॉन्टीन्यू हुआ, 'उसके बाद कहीं चौपाल पर पड़ी चारपाइयों पर सो लेंगे। फिर टिकट मिल गए तो चारों फिल्म देख आएंगे कोई सी भी।' 'तो टिकट के पैसे कौन देगा?' मित्र ने वाजिब प्रश्न उठाया तो मैंने कहा, 'कोई बात नहीं। कल की फिल्म मेरी तरफ से। पंद्रह अगस्त पर इतना तो मुझ जैसे देशभक्त का भी बनता है न!' 'फिर छह बजे के बाद क्या?' बंधु ने फिर पूछा तो मैंने कहा, 'फिर बाजार का चक्कर मार आएंगे। कल मैंने ऑफिस से आते आते देखा था कि पंद्रह अगस्त को ठेके पर स्पेशल सेल लगेगी। सेल वाली पिए बिना बड़े दिन हो गए यार! इस बहाने बैठ कर चार यार कहीं खा-पी लेंगे और आजादी पर थोड़ी बहुत चर्चा कर लेंगे। पीते हुए किसी भी राष्ट्रीय समस्या पर चर्चा करने के सिवाय और आज हम कुछ कर भी तो नहीं सकते न!' मैंने प्रोग्राम को थोड़ा और आगे सरकाया तो बंधु ने फोन पर ही मेरी पीठ थपथपाई। 'ऑफिस में हर स्टाफ मीटिंग में ऐसे ही तो मुझे तवज्जो नहीं दी जाती साहब! बंदा वही जो अमल करने के नहीं, वाह! वाह! करने वाले प्रोग्राम बनाने का हुनर रखता हो। यार! कल इंडिपेंडेंस डे है।

उसके बाद कम से कम नेशनल एंथम तो बनता है कि नहीं?' 'नेशनल एंथम गाएं वे जो साल तीन सौ सहत्तर दिन नेशन को खाते हैं। पर नेशनल एंथम गाएगा कौन? तुम्हें नेशनल एंथम आता है क्या? मैं तो स्कूल के दिनों में भी नेशनल एंथम नहीं गाया करता था।' बंधु ने जज्बाती होते कहा तो बात असमंजस वाली हो गई। 'फिर तो उन दोनों को भी क्या ही आता होगा? वे तो अपनी बीवियों के गान के सिवाय और कुछ करते ही नहीं।' मैंने उन दोनों की ओर से दावे के साथ कहा तो वे बोले, 'मैं तो भूल ही गया था। गूगल है न! गूगल पर खुद को पढने के सिवाय और सब कुछ मिल जाता है।' 'तो डन?' 'डन डना डन डन! कॉन्ड्री गूगल कर दूं क्या?' 'नहीं! बाद में कर लेंगे। मरे तो नहीं जा रहे हैं।' बंधु ने मेरे बनाए प्रोग्राम पर स्वीकृति की मुहर लगाई तो मुझे अपने सफल प्रोग्रामर होने पर एक बार फिर गर्व हुआ।

धर्म गुरु बनें पथ प्रदर्शक

पूरा विश्व, विशेषकर भारत देश और भारत देश में भी हिंदू समाज बांग्लादेश में जो कुछ हो रहा है, उसे देखकर बहुत चिंतित है। हृदय नहीं, आत्मा तक विचलित है। जिस प्रकार बांग्लादेश में हिंदू समुदाय को चुन-चुन कर मारा जा रहा है, महिलाओं के साथ दुव्यवहार हो रहा है, घर लूटे जा रहे हैं, केवल लूटे ही नहीं जा रहे अपितु लूटने वाले सिर पर लूट का सामान रखे हाथों में कीमती वस्तुएं उठाए ऐसे नाचते-गाते जा रहे हैं, जैसे उन्हें कोई बहुत बड़ी दौलत अनायास मिल गई। जैसे उन्होंने अपने किसी बड़े दुश्मन का नाश कर दिया। याद रखना होगा कि आग आग है। दूर कहीं आग लगी है, यह देखकर निश्चिंत नहीं हो सकते, क्योंकि कोई भी एक चिंगारी आपके घर तक पहुंचकर जला सकती है। अफगानिस्तान में जो कुछ हुआ, वह भारतीय समाज के लिए बहुत ही दुख और चिंता का विषय रहा। स्थिति यह हो गई कि हमें अपने गुरुद्वारा से श्री ग्रंथ साहिब को सुरक्षित उठाकर लाना पड़ा, जिसमें भारत सरकार का विशेष सहयोग और योगदान रहा। वहां का सिख-हिंदू समाज भी बेबस होकर वहां से आ गया। पाकिस्तान में शायद ही कोई ऐसा सप्ताह जाता होगा जिस दिन हमारी बेटियों पर कट्टरपंथी मुस्लिमों का हमला नहीं होता। बेचारा बेबस बाप चौक चौराहे में छाती पीटता हुआ पुकारता है, दुहाई देता है, उसकी दोनों बेटियों को कोई वापस ले आए, पर अरण्य रौदन की तरह उसकी चीखें कहीं हवा में गायब हो गईं। मंदिर तोड़े गए, गुरुद्वारे अपवित्र किए गए, पर हम भारतीय विवश थे, कुछ न कर पाए। आश्चर्य यह है कि एक सौ करोड़ से ज्यादा हमारा धार्मिक समाज अपने पूजा स्थानों में पाठ पूजा करके अपने परिवार के लिए सौगातें मांगकर सुरक्षा मांग कर मंदिरों, पूजा स्थानों से आ गया। दो आंसू उनके लिए नहीं बहाए जो विधर्मियों के कब्जे में सिसक रही हिंदू बेटियां थीं।

अब तो अति हो गई। इंग्लैंड में, कनाडा में, आस्ट्रेलिया में, यहां तक कि अमरीका में भी हमारे श्रद्धा केंद्रों पर हमले होने लगे। हम खामोश रहे, जिसका परिणाम आज बांग्लादेश में देखने को मिल रहा है, पर आज भी हिंदुस्तान का हिंदू समाज जागा नहीं। बुद्धिजीवी मुसलमान भी खामोश हैं। मुस्लिम धर्म गुरुओं ने एक शब्द न तो कभी उनके लिए बोला जो सिर तन से जुदा की बात करते थे और न ही बांग्लादेश में हिंदुओं पर कहर ढहाने वालों को समझाने के लिए। मुझे उनसे शिकायत करने का अधिकार भी क्या है? मानवीय अधिकार तो है, राष्ट्रीय अधिकार भी है, क्योंकि हम भारत के मूल धर्म के अनुयायी हैं। विश्व के कल्याण की बात करते हैं। आत्मवत सर्वभूतेषू की दुहाई देते हैं, पर दुनिया हमारे इन जयकारों को नहीं सुनती। सीधी सी बात है वीर भोग्या वसुंधरा। दुखद आश्चर्य यह है कि हमारे भारत में लाखों लाखों ऐसे मंदिर, पूजा स्थान, सभी धार्मिक संप्रदायों के श्रद्धा केंद्र हैं। मैं यहां मस्जिदों की बात नहीं कर रही, लेकिन वैष्णव, शाक्त, शैव, आर्य समाज, निरंकारी, नामधारी, जैन, बौद्ध आदि भक्तों के अनुयायियों के श्रद्धा केंद्र हैं। धन संपदा के अकूत भंडार भी वहां हैं। हम ईश्वर के उस रूप की पूजा करते हैं जो सशस्त्र हैं, राक्षसों का संहारक है। महिषासुर मर्दनी हमारा आदर्श है। हजारों हजारों राक्षसों का संहार करने वाले भगवान श्रीकृष्ण हमारे इष्ट हैं। 'निशिचर हीन करहूं मही, भुज उठाई प्रण कीन' की अटल अमिट घोषणा प्रतिदिन सुनने को मिलती है। हमारी प्रातः राम नाम के साथ प्रारंभ होती है और रात्रि विश्राम राम राम कहकर ही किया जाता है। प्रश्न यह है कि राम का नाम लेने वाले, कृष्ण जी की लीलाओं का गान करने वाले यह क्यों भूल गए कि बचपन में ही श्रीराम जी और श्रीकृष्ण जी ने कितने असुरों का संहार किया था। हम क्यों ऐसे निष्क्रिय हो गए? हमारे मंदिरों से बजरंग बलि और हर हर महादेव की ध्वनि तो गूंजती है, पर शस्त्र उठाकर उनसे मुकाबले के लिए तैयारी बहुत कम लोग दिखाई देते हैं, जो दुनिया के किसी देश में उनका संहार करते हैं जो हिंदू हैं, उनकी हालत वैसी ही है जैसा विभीषण ने कहा था: सुनहू पवनसुत रहनि हमारी जिनी दसनन महू जीभ बिचारी, अर्थात दांतों के बीच जो जीभ की हालत है, वही उसकी है।

आज बांग्लादेश, पाकिस्तान में बसे हिंदू-सिख समाज की हालत भी वही है। शक्ति हमें देनी है। जिन लोगों को हिंदू राष्ट्र के नाम से कष्ट होता है, उनको यह जान लेना चाहिए कि हिंदू राष्ट्र का अर्थ किसी का सिर तन से जुदा करना नहीं, बल्कि हिंदू की रक्षा करना है। पूरे विश्व को हिंसा से बचाना है, पर हम आज स्वयं ही हिंसा का शिकार हो रहे हैं। शिकायत भी किससे की जाए। सेना अपना काम कर रही है। अर्धसैन्य बल प्रचुर मात्रा में हैं, पर हर राष्ट्र की अपनी सीमा है। मेरा प्रश्न उनसे है जो करोड़ों साधु-संत, मठाधीश, कथावाचक, महंत, संत और सबसे ऊपर हमारे परम पूजनीय शंकराचार्य जी जगतगुरु विराजमान हैं। संकट की इस घड़ी में उनका संदेश जगत को क्यों नहीं मिल रहा। हिंदू उनकी ओर आशा भरी नजरों से देख रहा है। क्या हमारे मठ, मंदिर, पूजा स्थान केवल स्वर्ण भंडार इक_ा करने और सोने के कलश सजाने के लिए हैं? क्या हमारे यह श्रद्धा केंद्र कभी उनकी रक्षा कर सकेंगे जो प्रतिदिन श्रद्धा के साथ उनकी शरण में जाते हैं। आज का प्रश्न तो यह है कि संकट की घड़ी में क्या अपनी रक्षा कर सकेंगे? ऐसा लगता नहीं, क्योंकि इस्कान जैसे विशाल संगठन के मंदिर लूटे और जलाए गए। उन्होंने 1971 के युद्ध में लाखों लाखों बांग्लादेशियों को भोजन देकर उनका पालन पोषण किया था, शरण दी थी, पर सुरक्षा वह भी नहीं दे सके। क्या बार बार कश्मीर के मंदिरों का इतिहास दोहराया जाएगा। क्या फिर सोमनाथ के मंदिर का दुखांत दुर्भाग्य से देखने को मिलेगा? मैं जानती हूं कि हमारे देश में, हमारी सरकार, हमारी सुरक्षा पंक्ति मजबूत है, पर जनता मजबूत नहीं होगी तो कैसे बनेगा। अगर हमारे शंकराचार्य सरीखे धर्म गुरु एक आवाज दें तो मंदिर मंदिर में नवयुवक राम जी और कृष्ण जी की तरह शंकर और दुर्गा की तरह शस्त्र शिक्षा लेंगे और जो हमारे जीवन के, आस्था के, धर्म के विरोधी हैं, उनसे रक्षा भी करेंगे और उनको उनकी भाषा में उत्तर भी देंगे। पर अफसोस कल जब बांग्लादेश त्रस्त था, बेटियां सुरक्षा के लिए छिप रही थीं, मर रही थीं, उस समय अपने ही देश के लाखों लोग वे भी थे जो किसी मजार पर, किसी कब्र पर उनके आगे ही नाक रगड़ रहे थे जो गाय को खाते रहे, जो गाय को काटते रहे। मैं जानती हूं कि अधिकतर कब्रों और मजारों में कोई शरीर नहीं है, केवल ईंट पत्थर का ढांचा करके अंध श्रद्धालु और स्वार्थी समाज के सिर झुकाने के लिए स्वार्थी लोगों ने यह सब ढांचे खड़े कर दिए। हमारा समाज यह भूल गया कि पूरे अरब देशों और मुस्लिम समाज में कब्र पूजा अपराध है।

अरब देशों में कोई पक्की कब्र नहीं, क्योंकि वह उसे भी मूर्ति मानते हैं, पर यहां की हालत तो यह है: 'जाका गुरु भी अंधलाए चेला खरा निरंध। अंधे अंधा ठेलेया दोनों कूप पड़ंत।।' संसद में भी दुर्भाग्यपूर्ण दृश्य देखने को मिला, जब वक्फ बोर्ड में संशोधन का विरोध उन्होंने किया जिनके सामने देश नहीं, सत्ता है। जिस भाषा का प्रयोग सलमान खुर्शीद ने किया तथा कुछ अन्य कांग्रेस नेताओं ने किया वह देशवासियों की पीठ में छुरा घोंपने जैसा था, पर उन्होंने वह काम सरेआम किया, उनको तालियां बजाने वाले भी मिल गए। प्रश्न यह है कि कब तक पिटते रहेंगे, लुटते रहेंगे, अस्मत की चीख पुकार सुनने को मिलेगी, पर हम केवल उस प्रभु का नाम लेंगे जिसने नि_लों के लिए नहीं अपितु कर्मशीलों के लिए यह संदेश दिया था कि जुल्म करना पाप है तो जुल्म सहना भी पाप है।

जुलाई माह में थोक महंगाई में मिली राहत; लेकिन निर्यात की स्थिति भी बिगड़ी

परिवहन विशेष न्यूज

जुलाई में तीन नए आंकड़ें सामने आए हैं जो थोक महंगाई देश के आयात-निर्यात और घरेलू बाजार में कारों की बिक्री की ओर इशारा करते हैं। जहां एक तरफ थोक महंगाई में राहत मिली है वहीं जुलाई में आयात में 7.45 फीसद की वृद्धि देखी गई है। इसके साथ ही आटोमोबाइल सेक्टर की बिक्री इसी महीने 2.5 फीसद घट गई है।

नई दिल्ली। बुधवार को देश की इकोनमी से जुड़े तीन आंकड़ें जारी हुए हैं। एक आंकड़ा थोक महंगाई को लेकर है जबकि दूसरा जुलाई माह में देश के आयात-निर्यात का है। तीसरा आंकड़ा घरेलू बाजार में कारों की बिक्री को लेकर है। थोक महंगाई की दर जुलाई माह में घट कर 2.03 फीसद पर आ गई है जो आरबीआई व वित्त मंत्रालय दोनों के लिए अच्छी खबर है।

लेकिन इसी महीने निर्यात 1.2 फीसद घट कर 33.98 अरब डॉलर पर आ गया है जबकि आयात में 7.45 फीसद की वृद्धि हुई है। देश के मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर का नब्ज बताने वाले आटोमोबाइल सेक्टर की बिक्री इसी महीने 2.5 फीसद घट गई है। आटोमोबाइल सेक्टर देश के कुल मैन्यूफैक्चरिंग में 20 फीसद योगदान देता है।

थोक महंगाई की दर तीन महीनों के न्यूनतम स्तर पर

सरकार की तरफ से जारी थोक महंगाई दर के आंकड़े बताते हैं कि जुलाई, 2024 में यह दर 2.04 फीसद रही थी। मानसून के बावजूद खाने पीने की चीजों खास तौर सब्जियों की थोक कीमतों में गिरावट दर्ज की गई है। एक महीने पहले थोक महंगाई की दर 3.36 फीसद थी जबकि एक वर्ष पहले जुलाई, 2023 में मंहगाई की दर शून्य से भी नीचे 1.23 फीसद थी।

आंकड़ों से साफ होता है कि जुलाई, 2024 की खाद्य उत्पादों की थोक महंगाई दर 3.45 फीसद थी जबकि जून, 2024 में यह 10.87 फीसद रही थी। इसके बाद ही मौद्रिक नीति की समीक्षा करते हुए आरबीआई गवर्नर डॉ. शक्तिकांत दास ने थोक महंगाई को एक बड़ी चुनौती के तौर पर चिन्हित किया था।

सब्जियों की थोक कीमत ही इस एक महीने में 38.76 फीसद से घट कर 8.93 फीसद आ गई है। बहरहाल, लंबे अर्से बाद थोक महंगाई और खुदरा महंगाई की दरें आरबीआई की तरफ से निर्धारित लक्ष्य चार फीसद से नीचे के स्तर पर आई हैं। इसी हफ्ते जारी डाटा बताते हैं कि जुलाई माह में खुदरा महंगाई की दर पांच वर्षों के न्यूनतम स्तर पर 3.54 फीसद पर आ गई है।

निर्यात में 1.2 फीसद की गिरावट

हाल के महीनों में निर्यात के मोर्चे पर देश का प्रदर्शन बहुत अच्छा नहीं रहा है। जुलाई माह में यह 1.2 फीसद की गिरावट के साथ यह 33.98 अरब डॉलर पर आ गया है। वैसे तीन महीनों बाद निर्यात में कमी दर्ज की गई है। इस दौरान आयात 7.58 फीसद की वृद्धि के साथ 57.48 अरब डॉलर हो गया है।

आयात बढ़ने के पीछे इलेक्ट्रोनिक्स उत्पादों, कच्चे तेल व चांदी आयात में वृद्धि को बताया गया है। इससे देश का व्यापार घाटा 23.5 अरब डॉलर का हो गया है। जून, 2024 में व्यापार घाटा (आयात व निर्यात का अंतर) 21 अरब डॉलर का और जून, 2023 में 19.3 अरब डॉलर का था। जुलाई माह में सरकार ने सोने के आयात पर शुल्क घटाया था और जो आंकड़े सामने आये हैं उससे पता चलता है कि सोना आयात 10.65 फीसद घट कर 3.13 अरब डॉलर का रह गया है। लेकिन इलेक्ट्रोनिक्स सामानों के आयात में 37.31 फीसद की वृद्धि दर्ज हुआ है जो सरकार के लिए चिंता की बात हो सकती है।

वाणिज्य सचिव सुनील बर्थवाल ने बताया कि अभी जो अंतरराष्ट्रीय कारोबार का ट्रेंड है उसको देखते हुए वर्ष 2024-25 में भारत से उत्पादों व सेवाओं का निर्यात पिछले वर्ष के 778 अरब डॉलर के स्तर को आसानी से पार कर सकता है। इस दौरान चीन को निर्यात में 9.44 फीसद की गिरावट आई है जबकि वहां से होने वाले आयात में 13 फीसद की वृद्धि दर्ज की गई है।

घरेलू बाजार में पैसेंजर वाहनों की बिक्री घटी

घरेलू बाजार में यात्री वाहनों की बिक्री जुलाई, 2024 में 2.3 फीसद घट कर 3,41,510 रही है। वाहनों की बिक्री में इस कमी के लिए ग्राहकों की मांग के साथ ही कंपनियों की तरफ से कम आपूर्ति को भी जिम्मेदार माना जा रहा है।

दरअसल, पिछले कुछ महीनों से बाजार की मांग से ज्यादा आपूर्ति कर रही थी और अब उन्होंने आपूर्ति कम दी है। भारतीय आटोमोबाइल सेक्टर के लिए पिछले दो साल काफी अच्छे रहे हैं। लेकिन अब संकेत है कि मांग संकुचित हो रहा है। ऐसा हर दो वर्षों बाद होता है।

सोसायटी ऑफ इंडियन आटोमोबाइल मैन्यूफैक्चर्रस (सियाम) की तरफ से जारी आंकड़े बताते हैं कि कार कंपनियों ने जुलाई, 2023 में अपने डीलरों को कुल 3,50,355 वाहनों की आपूर्ति की थी। इस महीने मोटरसाइकिलों की थोक बिक्री 12.5 फीसद (14,41,694) और स्कूटरों की बिक्री 29.2 फीसद (5,53,642) बढ़ी है।

रिटेल के बाद थोक महंगाई भी घटी, जुलाई में 2.04 फीसदी रहा इन्फलेशन रेट

आज थोक महंगाई दर के आंकड़े जारी हो गए है। मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार जुलाई में थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) आधारित मुद्रास्फीति 2.04 फीसदी पहुंच गया है। यह जून की तुलना में काफी कम है। 12 अगस्त को खुदरा महंगाई दर जारी हुए थे। जुलाई में खुदरा महंगाई दर में भी नरमी देखने को मिली है। पढ़ें पूरी खबर..

नई दिल्ली। खाद्य वस्तुओं खासकर सब्जियों और मैन्यूफैक्चरिंग उत्पादों के दाम में नरमी आने से थोक महंगाई दर भी घटा है। जुलाई में डब्ल्यूपीआई 2.07 फीसदी रहा है। यह जून में 3.36 प्रतिशत पर पहुंच गया था जो कि 16 महीने का उच्चतम स्तर था।

उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT) ने अपने एक्स पोस्ट में कहा कि WPI पर आधारित मुद्रास्फीति की वार्षिक दर जुलाई 2024 में 2.04 फीसदी थी, जबकि जून 2024 में यह 3.36 फीसदी थी।

- प्राथमिक वस्तुओं का महंगाई दर जुलाई 2024 में 3.08 फीसदी रही।
- ईंधन और बिजली की मुद्रास्फीति दर जुलाई 2024 में बढ़कर 1.72 प्रतिशत हो गई।
- मैन्युफैक्चर्ड प्रोडक्ट ग्रुप की महंगाई दर जुलाई में बढ़कर 1.58 फीसदी हो गई।

रिटेल महंगाई में भी गिरावट

इस सप्ताह की शुरुआत में जारी आंकड़ों से पता चलता है कि जुलाई में रिटेल मंहगाई दर 3.54 प्रतिशत रही। यह 5 साल के निचले स्तर पर है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) मौद्रिक नीति तैयार करते समय खुदरा मुद्रास्फीति को ध्यान में रखा था। अगस्त में हुए एमपीसी बैठक में मौद्रिक नीति समीक्षा में रेपो दर को लगातार नौवीं बार 6.5 प्रतिशत पर स्थिर रखा।

स्टारबक्स ने लक्ष्मण नरसिम्हन की जगह ब्रायन निकोल को बनाया सीईओ

परिवहन विशेष न्यूज

स्टारबक्स ने अपने टीम में एक अहम बदलाव करते हुए लक्ष्मण नरसिम्हन की जगह ब्रायन निकोल को नया सीईओ घोषित कर दिया है। बता दें कि निकोल मैक्सिकन-प्रेरित फूड चेन चिपोटल के सीईओ हैं। निकोल पिछले दो वर्षों में स्टारबक्स के सीईओ बनने वाले चौथे व्यक्ति होंगे और वे नौ सितंबर को कार्यभार संभालेंगे। आइये इसके बारे में विस्तार से जानते है।

नई दिल्ली। मुश्किलों से गुजर रही बहुराष्ट्रीय कॉफी सीरीज स्टारबक्स ने मंगलवार को भारतीय मूल के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) लक्ष्मण नरसिम्हन की जगह ब्रायन निकोल को चेयरमैन एवं सीईओ नियुक्त करने की घोषणा की।

स्टारबक्स ने एक अपनी प्रेस रिलीज में कहा कि निकोल नौ सितंबर को अपनी नया दायित्व संभालेंगे। उस समय तक स्टारबक्स के मुख्य वित्त अधिकारी राहेल रग्गेरी अंतरिम सीईओ के रूप में काम करेंगे।

निकोल बनें स्टारबक्स के सीईओ

निकोल पिछले दो वर्षों में स्टारबक्स के सीईओ बनने वाले चौथे व्यक्ति होंगे। वह फिलहाल मैक्सिकन-प्रेरित खाद्य श्रृंखला चिपोटल के सीईओ हैं।

निकोल ने अपनी नियुक्ति पर कहा कि मैं स्टारबक्स में शामिल होने के लिए उत्साहित हूं और हजारों समर्पित भागीदारों के साथ इस अविश्वसनीय कंपनी को आगे बढ़ाने में मदद के अवसर के लिए आभारी हूं।

तत्काल प्रभाव से हट रहे नरसिम्हन

57 वर्षीय नरसिम्हन सीईओ और स्टारबक्स बोर्ड के सदस्य के रूप में अपनी भूमिका से तत्काल प्रभाव से हट रहे हैं।

कंपनी ने बताया कि अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने स्टारबक्स पार्टनर अनुभव में सुधार किया। साथ ही सप्लाई चेन में जरूरी नवाचार किए और हमारे स्टोर संचालन को बढ़ाया।

हॉब्सन ने कहा कि बोर्ड की ओर से, मैं लक्ष्मण को स्टारबक्स में उनके योगदान और हमारे लोगों और ब्रांड के प्रति उनके समर्पण के लिए ईमानदारी से धन्यवाद देना चाहता हूं।

नरसिम्हन, जो बोर्ड छोड़ रहे हैं, ने मार्च 2023 में स्टारबक्स का कार्यभार संभाला और उन्होंने कॉफी चेन को अपने अधिकार क्षेत्र में बड़े पैमाने पर संघर्ष करते देखा है।

हाल ही में, कम से कम एक साल से खुले स्टोर पर चेन की बिक्री में वैश्विक स्तर पर 3 प्रतिशत की गिरावट आई, जिसमें इसके घरेलू उत्तरी अमेरिका के बाजार में 2 प्रतिशत की गिरावट शामिल है।

SEBI प्रमुख पर लगे आरोपों से जुड़े कोष का मॉरीशस से लेना-देना नहीं, आयोग ने दी सफाई

परिवहन विशेष न्यूज

एफएससी ने कहा कि हिंडनबर्ग की रिपोर्ट में कहा गया है कि आइपीई प्लस फंड मॉरीशस का एक छोटा विदेशी कोष है और आइपीई प्लस फंड-1 मॉरीशस में पंजीकृत है। हम यह साफ करना चाहते हैं कि आइपीई प्लस फंड और आइपीई प्लस फंड-1 मॉरीशस से जुड़ा नहीं है और इसे कोई लाइसेंस नहीं दिया गया है। सही मायने में इसका मॉरीशस से कोई लेना-देना नहीं है।

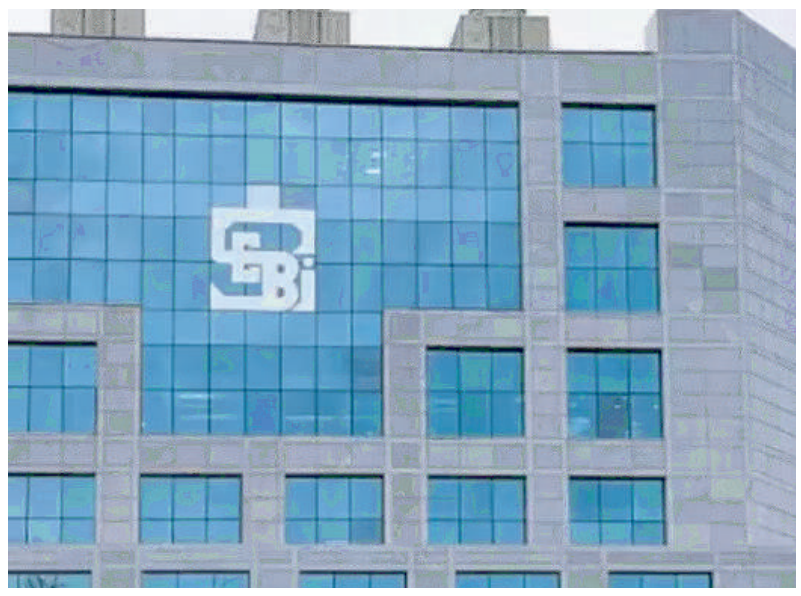

दिल्ली। मॉरीशस के वित्तीय सेवा आयोग (FSC) ने मंगलवार को कहा कि हिंडनबर्ग रिसर्च द्वारा सेबी प्रमुख माधबी पुरी बुच के खिलाफ हितों के टकराव के आरोपों में जिस कोष का जिक्र किया गया है, उसका उनके देश से कोई लेना-देना नहीं है।

आयोग ने दी सफाई

आयोग ने कहा कि उसने 10 अगस्त, 2024 को अमेरिकी शोध और निवेश कंपनी हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट को संज्ञान में लिया है। इसमें मारीशस-आधारित मुखौटा कंपनियों और मॉरीशस का कर चोरों के पनाहगाह के रूप में उल्लेख किया गया है।

एफएससी ने कहा कि हिंडनबर्ग की रिपोर्ट में कहा गया है कि 'आइपीई प्लस फंड' मॉरीशस का एक छोटा विदेशी कोष है और आइपीई प्लस फंड-1 मॉरीशस में पंजीकृत है। हम यह साफ करना चाहते हैं कि आइपीई प्लस फंड और आइपीई प्लस फंड-1 मॉरीशस से जुड़ा नहीं है और इसे कोई लाइसेंस नहीं दिया गया है। सही मायने में इसका मॉरीशस से कोई लेना-देना नहीं है।

मामला क्या है?

हिंडनबर्ग ने शनिवार को आरोप लगाया था कि सेबी चेयरपर्सन माधबी पुरी बुच और उनके पति ने बरमूडा स्थित फंड की मारीशस-पंजीकृत इकाई में एक अज्ञात राशि का निवेश करने के लिए 2015 में सिंगापुर में एक धन प्रबंधन कंपनी के साथ एक खाता खोला।

मारीशस फंड का संचालन अदाणी समूह का निदेशक कर रहा था और इसकी मूल इकाई का उपयोग दो अदाणी सहयोगियों द्वारा कोष की हेराफेरी करने तथा शेयर की कीमतें बढ़ाने के लिए किया गया था। गैर-बैंकिंग वित्तीय सेवा क्षेत्र और वैश्विक व्यापार के लिए एकीकृत नियामक एफएससी ने इस कोष के मॉरीशस में पंजीकृत होने की बात को नकारा है।

UIDAI को पांच साल के लिए मिली आयकर भुगतान से छूट, 2027-28 तक नहीं देना होगा कोई टैक्स

UIDAI को 5 सालों के लिए आयकर के भुगतान से छूट दे दी गई है। केंद्र सरकार से प्राप्त अनुदान/सब्सिडी आरटीआई शुल्क निविदा शुल्क स्क्रैप की बिक्री पीवीसी कार्ड सहित यूआईडीएआई द्वारा अर्जित बैंक डिपॉजिट ब्याज आयकर से मुक्त होगा। बता दें कि UIDAI का उद्देश्य आधार अधिनियम का अनुपालन सुनिश्चित करने के साथ अधिनियम के हिसाब से नियम और कानून बनाना है।

नई दिल्ली। वित्त मंत्रालय ने भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (UIDAI) की आय को वित्त वर्ष 2027-28 तक पांच साल के लिए आयकर के भुगतान से छूट दी है। इसके अनुसार, केंद्र सरकार से प्राप्त अनुदान/सब्सिडी; आरटीआई शुल्क, निविदा शुल्क, स्क्रैप की बिक्री, पीवीसी कार्ड सहित शुल्क/सदस्यता; प्रमाणीकरण, नामांकन और अद्यतन सेवा शुल्क; सावधि/सावधि जमा; और यूआईडीएआई द्वारा अर्जित बैंक जमा पर ब्याज आयकर से मुक्त होगा।

पांच साल नहीं लगेगा टैक्स

वित्त मंत्रालय के तहत केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) द्वारा इस आशय की एक अधिसूचना जारी की गई। इसमें कहा गया है कि यह अधिसूचना आकलन वर्ष 2024-2025, 2025-2026, 2026-2027, 2027-2028 और 2028-2029 के लिए लागू होगी।

क्या है UIDAI?

UIDAI एक वैधानिक प्राधिकरण है जिसकी स्थापना आधार अधिनियम, 2016 के प्रावधानों के तहत की गई है, जिसका उद्देश्य आधार अधिनियम का अनुपालन सुनिश्चित करना तथा अधिनियम के अनुरूप नियम और कानून बनाना है।

यह नोटिफिकेशन इस शर्त के अधीन प्रभावी होगी कि UIDAI किसी भी वाणिज्यिक गतिविधि में शामिल नहीं होगा; गतिविधियों और निर्दिष्ट आय की प्रकृति पूरे वित्तीय वर्ष में अपरिवर्तित रहेगी।

फ्रेशर को ऑफर किया ढाई लाख का पैकेज, अब ट्रोल हो रही कंपनी

टेक कंपनियों से फ्रेशर्स को भी शानदार सैलरी पैकेज की उम्मीद रहती है। सैलरी पैकेज को लेकर सोशल मीडिया पर कॉग्निजेंट को ट्रोल किया जा रहा है। दरअसल कंपनी ने फ्रेशर्स को 2.5 LPA का पैकेज ऑफर किया है। कपंनी के इस ऑफर पर यूजर्स मजाक उड़ा रहे हैं। आइए इस आर्टिकल में यूजर्स के रिएक्शन के बारे में जानते हैं।

नई दिल्ली। कॉलेज के बाद जब भी प्लेसमेंट के लिए फ्रेशर्स कंपनी में जाते हैं तो अच्छे पैकेज की उम्मीद होती है। हालांकि, फ्रेशर को कितना पैकेज मिलेगा यह कंपनी द्वारा तय किया जाता है। अगर आईटी सेक्टर की दिग्गज कंपनियों के सैलरी पैकेज की बात करें तो हर किसी को शानदार पैकेज की उम्मीद रहती है।

आईटी सेक्टर की दग्गिज कंपनी Cognizant का सैलरी पैकेज चर्चा में आ गया है। कंपनी के द्वारा पैकेज ऑफर के बाद सोशल मीडिया पर इस खूब ट्रोल किया जा रहा है। दरअसल, कंपनी ने नए कमचारियों के लिए जॉब पोस्ट की थी। इस पोस्ट के अनुसार वर्ष 2024 में पास-आउट स्टूडेंट को 2.5 लाख सैलाना पैकेज (Cognizant Package 2.5 Lakh Per annum) के साथ आईटी जॉब ऑफर कर रही है।

इंडियन टेक एंड इंफ्रा ने सोशल मीडिया एक्स (X) पर पोस्ट करके बताया कि कॉग्निजेंट ने ऑफ-कैंपस मास हायरिंग ड्राइव (cognizant hiring drive) की घोषणा की। इसमें 2024 बैच के स्टूडेंट आवेदन कर सकते हैं। आवेदन की अंतिम तारीख 14 अगस्त औ सैलरी पैकेज 2.52 लाख रुपये सालाना है।

यह पोस्ट 13 अगस्त को शेयर की गई थी। पोस्ट के शेयर होने के बाद इसे 1.5 मिलियन से ज्यादा बार देखा गया है और 20 हजार से ज्यादा रिपोस्ट किया गया। कमेंट सेक्शन में पोस्ट को लेकर खूब मजाक उड़ाया गया है।

यूजर्स का रिएक्शन

इस पोस्ट पर एक यूजर ने कमेंट किया कि 2.52 LPA बहुत ज्यादा है। इतने पैसों का ग्रेजुएट क्या करेंगे। वहीं, दूसरे यूजर ने कहा कि 2002 बैच वालों को 2.52 LPA ऑफ हुआ था।

वहीं, हिमांशु राजावत ने लिखा कि यह तो गांव में एक साल किराया और मैगी के कुछ पैकेट के बराबर भी नहीं है।

एक्स यूजर विष्णु प्रदीप ने पोस्ट को रिपोस्ट कर कहा कि हाल में हुए Layoff के बाद टेक कंपनियों में भर्ती होना बहुत अच्छी बात है, लेकिन 2.52 LPA का पैकेज चिंता का विषय है। 10 साल पहले भी औसत 3 LPA का पैकेज था।

यह भी पढ़ें: Petrol-Diesel Price: स्वतंत्रता दिवस से पहले अपडेट हुए फ्यूल प्राइस, नोएडा से सस्ता दिल्ली में पेट्रोल

फ्रेशर्स से कई गुना बड़ा है CEO का पैकेज

आईटी सेक्टर के सीईओ जैसे सीनियर अधिकारियों की सैलरी की बात करें तो यह फ्रेशर्स से कई गुना ज्यादा है। ज्यादा कमाने वाले टॉप मैनेजमेंट के लोगों की लिस्ट में इंफोसिस, विप्रो और एचसीएल आदि कंपनियों के सीईओ का नाम भी है। सीईओ की सैलरी को लेकर नारायण मूर्ति (NR Narayana Murthy) ने कहा कि एक सीईओ की सैलरी कर्मचारियों से 40 गुना ज्यादा नहीं होनी चाहिए।

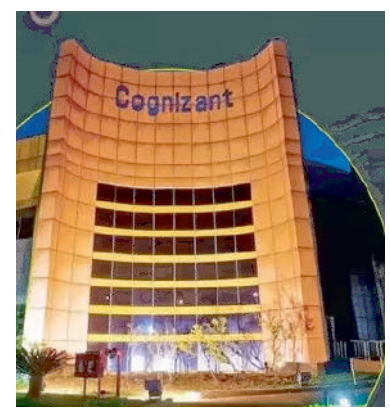

बांग्लादेश संकट के कारण भारत के चिकित्सा पर्यटन पर पड़ेगा असर, इजाल कराने वालों की संख्या में आएगी गिरावट

भारत के कुल चिकित्सा पर्यटन प्रवाह में बांग्लादेश का योगदान 50-60 फीसदी है। बांग्लादेश में अशांति बनी रही तो इस साल देश से आने वाले पर्यटकों की कुल संख्या में 10-15 फीसदी की गिरावट आ सकती है। जून में शेख हसीना के भारत दौरे पर पीएम मोदी ने बांग्लादेश से भारत इलाज करवाने आने वाले लोगों के लिए ई-मेडिकल वीजा सुविधा की शुरूआत करने का एलान किया था।

नई दिल्ली। भारत में बांग्लादेश से हर साल हजारों की संख्या में लोग इलाज कराने के लिए आते हैं। इस बीच आई एक रिपोर्ट में दावा किया गया कि बांग्लादेश में सामाजिक-राजनीतिक अशांति के कारण पड़ोसी देश भारत के चिकित्सा पर्यटन को प्रभावित हुआ और यदि अशांति बनी रही तो इस साल देश से आने वाले पर्यटकों की कुल संख्या में 10-15 फीसदी की गिरावट आ सकती है।

भारत के चिकित्सा पर्यटन में बांग्लादेश का बड़ा योगदान

बुधवार को जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि बांग्लादेश पड़ोसी देशों में चिकित्सा पर्यटन में अग्रणी योगदानकर्ता है और भारत के कुल चिकित्सा पर्यटन प्रवाह में बांग्लादेश का योगदान 50-60 फीसदी है। चूंकि भारत में बांग्लादेश से बड़ी संख्या में लोग इलाज कराने आते हैं इसलिए जून में शेख हसीना के भारत दौरे पर पीएम मोदी ने बांग्लादेश से भारत इलाज करवाने आने वाले लोगों के लिए ई-मेडिकल वीजा सुविधा की शुरूआत करने का एलान किया था।

बांग्लादेश से आने वाले पर्यटकों की संख्या में 10-15 प्रतिशत की गिरावट आने की संभावना

केयरएज रेटिंग्स की एक रिपोर्ट के अनुसार, बांग्लादेश में वर्तमान आंतरिक चुनौतियों ने मरीजों के प्रवाह को प्रभावित किया है क्योंकि इनमें से बड़ी संख्या में यात्रियों ने या तो अपनी यात्राएं रद्द कर दी हैं या स्थगित कर दी हैं। केयरएज रेटिंग्स के अनुसार, यदि अशांति बनी रहती है, तो 2024 के दौरान बांग्लादेश से आने वाले पर्यटकों की संख्या में 10-15 प्रतिशत की गिरावट आने की संभावना है।

संपूर्ण भारतीय अस्पताल क्षेत्र में चिकित्सा पर्यटन का योगदान लगभग 3 प्रतिशत से 5 प्रतिशत है। रिपोर्ट के अनुसार, 2024 के अंत तक धीरे-धीरे सामान्य स्थिति में आने के साथ-साथ बांग्लादेश से आने वाले पर्यटकों की संख्या में गिरावट को ध्यान में रखते हुए, इस क्षेत्र पर न्यूनतम प्रभाव दिखाई देगा।

ई-मेडिकल वीजा सुविधा से मिलेगा चिकित्सा पर्यटन को बढ़ावा

रिपोर्ट में कहा गया है कि 167 देशों के नागरिकों के लिए ई-मेडिकल वीजा सुविधा का विस्तार करने की सरकार की पहल से आने वाले वर्षों में चिकित्सा पर्यटन को और बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि इससे विशेष रूप से मेट्रो शहरों के अस्पतालों को सबसे अधिक लाभ होता है क्योंकि वे अंतरराष्ट्रीय रोगी प्रवाह के प्रमुख लाभार्थी हैं, रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में आने वाले लगभग 70-80 प्रतिशत चिकित्सा पर्यटक बांग्लादेश और मध्य पूर्व देशों से हैं।

भारत विश्व स्तर पर चिकित्सा पर्यटन के लिए शीर्ष 10 देशों में

भारत विश्व स्तर पर चिकित्सा पर्यटन के लिए शीर्ष 10 देशों में से एक है और विशेष रूप से दक्षिण-एशियाई, अफ्रीकी और मध्य पूर्व देशों में इसे पसंद किया जाता है।

बांग्लादेश मध्य पूर्व, म्यांमार, मालदीव, श्रीलंका और पाकिस्तान को पीछे छोड़ते हुए पड़ोसी देशों के बीच चिकित्सा पर्यटन में अग्रणी योगदानकर्ता के रूप में खड़ा है।

बाल-बाल बचे 350 से अधिक यात्री, बीच रास्ते से वापस लौटा मुंबई से लंदन जा रहा विमान; सभी सुरक्षित

मुंबई से लंदन जा रहे एअर इंडिया के एक विमान को बीच रास्ते से वापस लौटाना पड़ा। विमान में 354 यात्री सवार थे। विमान को सुरक्षित मुंबई में वापस लैंड करा लिया गया था। इसके बाद यात्रियों के लिए वैकल्पिक व्यवस्था की गई थी। इधर गोवा में एक विमान उड़ान भरते समय पक्षी से टकरा गया।

मुंबई। एअर इंडिया का लंदन जा रहा विमान केबिन में दबाव की समस्या के कारण बीच रास्ते से वापस मुंबई लौट आया। उस पर 354 लोग सवार थे। एअर इंडिया की उड़ान संख्या एआई-129 बुधवार सुबह रवाना हुई थी। फ्लाइट सुबह 8.36 बजे मुंबई से रवाना हुई और 11.30 बजे लौट आई।

एयरलाइन ने कहा कि यात्रियों को गंतव्य तक पहुंचाने के लिए पहले ही वैकल्पिक व्यवस्था कर ली गई। टिकट रद्द किए जाने पर पूर्ण रिफंड और किसी अन्य तिथि के लिए पुनर्निर्धारण की भी पेशकश की गई। वहीं, दूसरी ओर बुधवार सुबह गोवा से मुंबई जाने वाली एअर इंडिया की उड़ान संख्या एआई 684 के टेक ऑफ के दौरान पक्षी के टकरा जाने के बाद उड़ान रोकना पड़ा।

सुरक्षित उतारे गए सभी यात्री

एअर इंडिया के प्रवक्ता ने कहा कि यात्रियों और चालक दल की सुरक्षा के लिए चालक दल ने मानक संचालन प्रक्रियाओं के अनुसार उड़ान रोकी थी। सभी यात्री सुरक्षित रूप से उतर गए। विमान को आवश्यक निरीक्षण के लिए भेज दिया गया। यात्रियों को गंतव्य तक पहुंचाने के लिए वैकल्पिक व्यवस्था की गई।

हाइड्रोलिक समस्या के कारण विमान की आपात लैंडिंग

दिल्ली से मुंबई जा रहे विस्तारा के विमान में हाइड्रोलिक संबंधी तकनीकी समस्या आने पर उसकी छत्रपति शिवाजी महाराज अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर आपात लैंडिंग करानी पड़ी। इस पर 167 यात्री सवार थे। एयरलाइन ने कहा कि लैंडिंग से कुछ देर पहले विमान में तकनीकी समस्या का पता चला। एहतियाती कदम उठाते हुए इसकी लैंडिंग कराई गई।

वक्फ लिबरेशन मूवमेंट के प्रतिनिधिमंडल ने संयुक्त संसदीय समिति के सदस्य से मुलाकात की

वक़्फ़ संपत्ति को लेकर प्रस्तावित संशोधन हमें मंजूर नहीं: शाहिद अली एडवोकेट

नई दिल्ली: वक़्फ़ लिबरेशन मूवमेंट और यूनाइटेड मुस्लिम फ्रंट के एक प्रतिनिधिमंडल ने सांसद मौलाना मोहिबुल्लाह नदवी से मुलाकात की और वक्फ बोर्डों की शक्तियों को सीमित करने के एनडीए सरकार के फैसले का कड़ा विरोध किया और अपनी बात रखी।

इस मौके पर सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया के वकील शाहिद अली ने बताया कि मौजूदा वक़्फ़ बिल पर बैठक में हमने अपना पक्ष रखा है, इसके अलावा हमने संयुक्त संसदीय समिति के सभी सदस्यों को पत्र भेजा है जिसमें हमने सुझाव दिए हैं. हम संयुक्त संसदीय समिति के सभी सदस्यों और दुसरे नेताओं के साथ एक बैठक सुनिश्चित करेंगे और उनके समक्ष अपनी बात रखेंगे और गुरुद्वारा प्रबंधक समिति की तर्ज पर वक़्फ़ बोर्ड समिति के गठन की हमारी लंबे समय से चली आ रही मांग को भी दोहराएंगे.

उन्होंने कहा कि वक़्फ़ संपत्तियों के संबंध में सरकार द्वारा प्रस्तुत 40 संशोधन हमें स्वीकार्य नहीं हैं क्योंकि इससे वक़्फ़ अधिनियम की सार्थकता एवं उपयोगिता समाप्त हो जायेगी, जो मुसलमानों के पूर्वजों की देन है । जिसे मुसलमानों की तरक्की के लिए वक़्फ़ किया गया है।

वक़्फ़ अधिनियम और वक्फ संपत्तियों को संविधान द्वारा संरक्षित किया गया है, इसलिए सरकार इस कानून में ऐसा कोई संशोधन नहीं कर सकती है जो इन संपत्तियों की प्रकृति और स्थिति को बदल दे, इसलिए वक्फ अधिनियम में कोई भी संशोधन अस्वीकार्य है।

उन्होंने आगे कहा कि सिखों और अन्य धर्मों के लोगों की तरह, मुस्लिम भी इस देश के निवासी हैं, इसलिए जब सिखों को इन संपत्तियों की रक्षा और उपयोग करने और समिति के अधिकारियों को चुनने का अधिकार है, तो मुसलमानों को क्यों नहीं, इसलिए हम मांग करते हैं गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तर्ज पर वक़्फ़ बोर्ड कमेटी का गठन किया जाए।

करों नमन हैं 15 अगस्त

संग्राम में सब हो गए राम-राम
न जाने कितनों की जानें गई,
मजबूरी में कितने हुए गुलाम.
कितने लटके फाँसी पर,
सीने पर गोलियाँ जिसने खाई.
वतन को आज़ाद कराने में,
लुटा गए सब अपनी पाई-पाई.
इस तिरंगे की शान में यारों
किस-किसका लहू बहाँ,
तब लाशों के खूब ढेर पड़े,
जलियावाला बाग ने भी सहा.
कितने गाँधी, कितने सुभाष
क्या लाल, क्या बाल,
निगल गया सबको ये काल.
वो आज़ाद, ये सुखदेव, राजगुरु
सब के सब थे इनके भगत
याद करों आज फिर इन्हें,
करों नमन हैं 15 अगस्त.

संजय एम. तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
98260 25986
taranekar9@gmail.com

पावस ऋतु पर आनलाइन काव्य गोष्ठी संजय एम तराणेकर की अध्यक्षता व डॉ मनीष दवे के संचालन में सम्पन्न

परिवहन विशेष न्यूज

"मंथन साहित्यिक परिवार" द्वारा पावस काव्य गोष्ठी डॉ टी महादेव राव विशाखापट्टनम की विशिष्ट उपस्थिति,संजय एम तराणेकर इंदौर की अध्यक्षता, कमल किशोर राठौर निवृत्त प्राचार्य सेंधवा के मुख्य आतिथ्य, डॉ मनीष दवे इंदौर के संचालन तथा बच्चू लाल दीक्षित के संयोजकत्व में संपन्न हुई। सुभाष चंद्र शर्मा जयपुर द्वारा सरस्वती वंदना, प्रोफेसर राम पंचभाई यवतमाल महाराष्ट्र की मराठी में गणेश वंदना के साथ कवियों की अभिव्यक्ति का सिलसिला प्रारंभ हुआ।प्रथमतः गिरीश पाण्डेय काशी ने शिव स्तुति के साथ गज़ल "फिर से बेदर्द आज आया सावन, याद उनकी दिला गया सावन" की गर्जना के साथ कार्यक्रम का आगाज किया।

महेश गुप्ता राही ने "प्रेम को पुकारते रहो" इंजीनियर खंडेलवाल ने "रिमझिम रिमझिम बरसा पानी, छतरी में हो गई कहानी" गीता उनियाल उत्तराखंड ने ₹सावन में झूलों की लगी है कतार₹ ₹पी पी की पुकार,आई बागों में बहार₹ डॉ महेंद्र भट्ट ग्वालियर ने ₹मुझे फूल समझने की गलती ना करना मैं हरियाली सावन हूंऱ राजेन्द्र चौहान, बड़ौदा ने ₹रिमझिम रिमझिम मेघा बरसे₹ सस्वर गीत प्रस्तुत किया जिसे खूब सराहा गया।

डॉ टी महादेव राव विशाखापट्टनम ने *अमृत गागर पा लिया₹ बूंदों में समाहित प्रेम तुम्हारा मेघा अंजुरी भर पा लिया... यह पाषाण सा जीवन स्वांति मोतियों से तुमने सारे नभ को सजा दिया पढ़ कर दार्शनिक दृश्य प्रस्तुत किया। मो.सलीम ने ₹बर्बादियों का कोई हल नहीं मिला₹, ₹लाखों मिले बारात पर वर नहीं मिला₹ ग़ज़ल प्रस्तुत की। अध्यक्षता कर रहें संजय एम तराणेकर ने अपने उदबोधन में कार्यक्रम की समीक्षा के साथ ₹बरस जाओ झमा झम कब तक तरसाओगे मेघराज₹ शब्दों के साथ पावस ऋतु का अनुपम चित्रण किया। साथ ही उन्होंने गिरीश पांडे जी से प्रेरणा लेकर "ये बारिशो का मौसम.." की कार्यक्रम के चलते रचना कर डाली। जिसे सभी कवियों ने सराहा।कार्यक्रम के प्रणेता प्रोफेसर राम पंचभाई यवतमाल महाराष्ट्र ने अतिशय बारिश का चित्रण इन पंक्तियों के साथ किया "बाढ़ में बदल जाती है जिंदगी, पानी सी बह जाती है तब कविता गीत रुबाइयां जन्म लेने से पहले ही मर जाती हैं।"

आशीष त्रिपाठी के विरह गीत के बोल "बरसे है कारी बदरिया घर आजा सांवरिया" डॉ मनीष दवे, इंदौर ने "अबकी बरस सावन यूं बरसे परिवार संग मेल मिलाप बढ़ाए* तथा बच्चू लाल दीक्षित ने बौराती बरखा पर रचना प्रस्तुत की।

अंत में आभार प्रोफेसर राम पंचभाई ने मानते हुए आगामी कार्यक्रम में उपस्थित होने हेतु आवाहन किया। साहित्यकारों की प्रस्तुतियों की समीक्षा क्रमशः आशीष त्रिपाठी, प्रोफेसर रामपंच भाई, डॉ टी महादेव राव, डॉ कृष्णा जोशी, गिरीश पांडेय, संजय एम तराणेकर, आशीष त्रिपाठी, महेंद्र भट्ट व राम पंचभाई, डॉ मनीष दवे द्वारा की गई।

टाटा पावर की झींगा निर्यातक कंपनी पर लक्षित हमला

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड उडीशा, भुबनेस्वर : वर्तमान समय में अंतरराष्ट्रीय बाजार में झींगा की कीमत में भारी गिरावट के साथ-साथ यूरोपीय और अमेरिकी बाजारों में मंदी और इक्वाडोर में अंतरराष्ट्रीय बाजार में झींगा की कीमत में गिरावट के कारण पूरा उद्योग भारी मंदी के दौर से गुजर रहा है।. ऐसे में झींगा किसान अनिश्चित भविष्य के कारण असमंजस में हैं। वहीं, टाटा पावर ने प्रति यूनिट कीमत 3 रुपये प्रति यूनिट से बढ़ाकर 5.85 रुपये प्रति यूनिट कर दी और पिछले संबंध में शामिल निर्यातकों पर करोड़ों रुपये का जुर्माना लगाया।

2008/09 में ओडिशा का निर्यात 350 करोड़ रुपये था, जबकि वर्तमान में यह 4500 करोड़ रुपये तक पहुंच गया है। इसके लिए झींगा पालकों के प्रयास, उपज बढ़ाने, गुणवत्ता बनाए रखने और निर्यातकों के प्रयास सराहनीय हैं। हाल के दिनों में झींगा निर्यात में वृद्धि के कारण ओडिशा में 16 लाख से अधिक रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं, जिनमें से लगभग आधे महिलाओं को रोजगार मिला है। टाटा पावर द्वारा मूल्य वृद्धि के कारण झींगा की प्रसंस्करण लागत में औसतन रुपये की वृद्धि होगी। ऐसे में कई झींगा निर्यातक दूसरे राज्यों में शिफ्ट होने की सोच रहे हैं या कारोबार बंद करने की योजना बना रहे हैं । यदि टाटा पावर अपनी मनमानी, अमानवीय व्यापारिक हत्याओं से बाज नहीं आया और बिजली दरें पुरानी व्यवस्था के अनुसार लागू नहीं की, तो आगे स्थिति गंभीर होना तय है। झींगा किसान अपने खेत खो देंगे, निर्यातक बंद हो जाएंगे और बेरोजगारी भयावह हो जाएगी। इससे माननीय प्रधानमंत्री के मानस प्रोजेक्ट ब्लू रिवोल्यूशन को करारा झटका लगेगा। भारत और भारत के बाहर ओडिशा झींगा द्वारा बनाई गई गुणवत्ता और मांग हमेशा एक इतिहास रहेगी। उम्मीद है कि वर्तमान सरकार भारतीय मत्स्य निर्यातक संघ की ओडिशा शाखा पर ध्यान देगी और निर्यातक कंपनियां कैसे आगे बढ़ सकें और प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से शामिल मत्स्यपालन, मछली किसानों और श्रमिकों के भविष्य को सुरक्षित करने का ध्यान रखें प्रतिबंधित किया जाए ।

देशभर में दशहरा पर्व 12 अक्टूबर को मनेगा दिल्ली एनसीआर की सभी रामलीला कमेटियों की बैठक संपन्न हुई

कार्तिक जैन, परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली : महासंघ के अध्यक्ष अर्जुन कुमार ने बताया कि प्रमुख रामलीला के पदाधिकारियों ने 12 अक्टूबर को देश भर में दशहरा पर्व बड़ी धूम धाम से मनाने का फैसला सर्वसम्मति से लिया।

सिविल लाइन में आयोजित बैठक में अर्जुन कुमार ने बताया एमसीडी, एनडीएमसी, डीडीए, दिल्ली सरकार का सलम विभाग, पी डब्लू डी, दिल्ली छावनी सभी ने अलग अलग नियम बनाए हुए है। जिससे लीला आयोजको को हर साल मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

बैठक में मोजूद सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने लीला क्मेटियो को आश्ववासन दिया में शीघ्र ही मुख्य सचिव व अन्य अधिकारियों से समस्याओं का समाधान करूंगा, मैं संघर्षों से निकाला व्यक्ति हूं। इसके लिए भले ही मुझे धरना प्रदर्शन पर जाना पड़े, क्योंकि यह रामकाज है।

महासंघ के जनरल सेक्रेटरी सुभाष गोयल के अनुसार देश भर में रामलीला का आयोजन 03 से 13 अक्टूबर को किया जाएगा। अंतिम दिन भरत मिलाप के उपरांत इस वर्ष की रामलीलाओं का समापन होगा।

इस बैठक में सर्वश्री, धीरज धर, प्रदीप शरण, सुभाष गोयल, अवतार सिंह पूर्व मेयर, महेंद्र नागपाल, सतीश गर्ग आदि ने अपने विचार रखे, इस अवसर पर सांसद महोदय का पुष्प माला, स्मृति चिन्ह, देकर स्वागत किया। विनीत कुमार की और से प्रसाद का वितरण किया गया इसके लिए उनका धन्यवाद किया गया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023